सत्यमेव जयते

कोचिन लहर

2014 - 2015

कोचिन पोर्ट का एक ऐतिहासिक क्षण " क्वाण्टम ऑफ द सीज़ "

पोत परिवहन मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (रा.भा.) श्रीमती.विनीत कुलश्रेष्ठ एवं वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री.कमलस्वरूप कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के शीर्ष पदाधिकारियों के साथ बैठक करते हुए।

डॉ.सी.उण्णिकृष्णन नायर, सचिव तथा राजभाषा अधिकारी एवं श्रीमती.सूसन वर्गीस, सहा.सचिव ग्रेड-I (रा.भा.) ने राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिये न.रा.का.स. (उपक्रम)-कोच्ची से द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

कोचिन लहर

अध्यक्ष

श्री. पोल आन्टणी, आई.ए.एस.
कोचिन पोर्ट ट्रस्ट

संपादक

श्रीमती. सूसन वर्गीस
सहायक सचिव ग्रेड-1 (रा.भा.)

सह संपादक

श्री. मानस रंजन त्रिपाठी, हिन्दी अनुवादक
श्रीमती. एस. राजलक्ष्मी, निम्न श्रेणी लिपिक

सलाहकार

श्रीमती. गौरी एस. नायर, सचिव एवं राजभाषा अधिकारी
डॉ. सी. उण्णिकृष्णन नायर, यातायात प्रबन्धक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, इससे पोर्ट ट्रस्ट का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका को अधिकाधिक सारगर्भक बनाने हेतु आपके सुचिन्तित विचारों का हार्दिक स्वागत है। कृपया हमें अपने विचारों से अनुगृहित करें।

विल्लिंगडन आईलन्ड
कोचिन - 682 009, केरल
दूरभाष : 2582006, 2582122
ईमेल : hindisectioncpt@gmail.com
टेलक्स : 0885 - 6203
फैक्स : 0484 - 2668163

मुद्रण : अमरकेरला इन्डस्ट्रीस, कोचिन-18
दूरभाषः 2353804

असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।

अध्यक्ष का संदेश

"कोचन लहर" के इस अंक के प्रकाशन से मैं अत्यधिक उत्साहित हूँ। वास्तव में पत्रिकायें हमारे भावोन्मेषों के संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम और समाज का मार्गदर्शक होती हैं। इस पत्रिका के माध्यम से हमने जहाँ एक ओर राजभाषा हिन्दी को उसके पारंपरिक प्रायोगिक परंपरा से पृथक कर अत्याधुनिक तकनीकों से जोड़ने का प्रयास किया वहीं दूसरी ओर इसके प्रति हमारे कर्मचारियों की निष्ठा व उनकी सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने की पहल की है। आज राजभाषा हिन्दी को सिर्फ़ प्रोत्साहन की नहीं अपितु समर्पण एवं प्रतिबद्धता की जरूरत है। आज हम ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमें चुनौती दे रही हैं और हम इसे स्वीकार करने के लिये पश्चिमी भाषा की ओर झूक रहे हैं। हमारे पास संसाधनों की कोई कमी नहीं, कमी है तो सिर्फ हमारी मनोवृत्ति में। परन्तु अब और नहीं। हिन्दी हमारे लिये एक भाषा मात्र नहीं है अपितु यह सैंकड़ों भारतीयों के हृदयों की वाणी है और आज वह समय आ गया है, हमें हमारे हृदय की भाषा को भविष्य के साथ जोड़ना है और इसे एक वैश्विक भाषा बनानी है।

"कोचिन लहर" पत्रिका के उज्वल भविष्य की कामना करते हुए मैं इसके माध्यम से आप सभी को हिन्दी प्रगति अभियान में सम्मिलित होकर निस्वार्थपूर्ण योगदान देने एवं हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का हिन्दी को जन जन की भाषा बनाने के स्वप्न को साकार करने हेतु निमंत्रण करता हूँ।

"चलिये..... एक कदम हिन्दी की प्रगति की ओर"

धन्यवाद।

पोल आन्टणी

पोल आन्टणी
अध्यक्ष

अवसर को खो देना, सफलता को खो देना है।

सचिव का संदेश

यह मेरे लिये अत्यन्त हर्ष एवं सौभाग्य कि बात है कि हमारी गृह पत्रिका "कोचिन लहर" के इस नवीनतम अंक के माध्यम से मुझे पहली बार आपके संपर्क में आने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। आज तेजी से विकसित प्रौद्योगिकी के दौड़ में हिन्दी सिर्फ़ एक कार्यालयीन भाषा नहीं रही बल्कि अपने क्षेत्रीय सीमाओं को लांघ कर विश्व दरवार में अपना कदम रखा है। हिन्दी हमारे लिये एक संपर्क भाषा ही नहीं अपितु वह धागा है जो हमारी राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को एक सूत्र में बांध कर राष्ट्र की गरिमा को प्रसिद्धि के शिखर तर पहुंचाया है। ऐसे में हिन्दी की प्रगति हमारा सांविधानिक उत्तरदायित्व नहीं बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है। पिछले कई सालों से हम निरंतर निस्वार्थपूर्ण भाव से इस दिशा में सतत प्रयत्नशील हैं। हमारा कार्यालय हिन्दी के सर्वांगीन प्रगति के लिये सर्वथा प्रतिबद्ध है। कोचिन लहर हमारे लिये एक पत्रिका नहीं अपितु हिन्दी की प्रगति की दिशा में हमारे अथक प्रयास और हमारे कर्मचारियों की सृजनात्मकता का एक प्रतिबिंब है।

मैं कोचिन लहर के प्रकाशन के इस पावन अवसर पर सभी कर्मचारियों एवं संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि हिन्दी के सर्वांगीन प्रगति के लिये आप सभी प्रतिबद्ध हों।

कोचिन लहर पत्रिका का प्रकाशन निर्विध्न जारी रहे इसी शुभकामना के साथ।

जय हिन्द्। जय हिन्दी।

गौरी एस. नायर
सचिव

अज्ञान ही पाप है। शेष सारे पाप तो उसकी छाया ही हैं।

कोचिन लहर

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
MINISTRY OF HOME AFFAIRS, DEPTT OF OFFICIAL LANGUAGE

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण-पश्चिम)
REGIONAL IMPLEMENTATION OFFICE (SOUTH-WEST)

केन्द्रीय भवन, ब्लॉक-सी-1, सातवाँ तल, सेस पी.ओ., कोच्चिन-682 037, (केरल)
KENDRIYA BHAWAN, BLOCK-C-1, 7th FLOOR, CSEZ P.O., COCHIN-682 037 (KERALA)

संदेश

दिनांक Dated : 17-7-2015

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कोचिन पोर्ट ट्रस्ट नियमित रूप से "कोचिन लहर" नामक पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार हेतु अनुकूल वातावरण निर्मित करते के लिए पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इस पत्रिका में विविध विषयों से संबंधित सामग्री का समावेश किया गया है। और भी अच्छा होगा यदि कार्यालयीन कामकाज से संबंधित कुछ तकनीकी विषयों को भी शामिल किया जाए। हिंदी को सूचना प्रौद्योगिकी एवं विभिन्न व्यवसायों एवं व्यापार से जोड़ने की आवश्यकता है। गृह पत्रिका में इन क्षेत्रों में हुई प्रगति की अद्यतन जानकारी दी जा सकती है। आशा करती हूँ कि यह पत्रिका अपने नाम को साकार करते हुए राजभाषा हिंदी के विकास में भी एक लहर पैदा करेगी।

इस शुभ कार्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. सुनीता देवी यादव)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

अहंकार ही पराजय का द्वार है।

संपादकीय

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट की गृह पत्रिका "कोचिन लहर" महज एक पत्रिका नहीं अपितु पिछले एक दशक से हमारी सृजनात्मकता और राजभाषा हिन्दी के प्रति हमारी निष्ठा का द्योतक है। 40 पृष्ठों में संकलित इस छोटी सी कृति में हमने राजभाषा हिन्दी के साथ विविध रुचिपूर्ण ज्ञानवर्धक लेखों को समाकलित कर उसे मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयत्न किया है। एक समय था जब राजभाषा हिन्दी सिर्फ़ प्रोत्साहन की बैसाखी पर चल रही थी। परन्तु हिन्दी को सिर्फ़ प्रोत्साहन की नहीं अपितु आत्मिक निष्ठा की जरूरत है। आज हिन्दी को एक ऐसे मंच की आवश्यकता है जहाँ वह अपने वैश्विक स्वरूप को प्रकट कर सके। हमें हिन्दी को राजभाषा की दायरे से बाहर निकाल कर उसे जन जन की भाषा और सभी हिन्दुस्तानियों के हृदय की भाषा बनानी है। हिन्दी को एक ऐसा पंख देना है ताकि वह वैश्विक मंच पर अपना उड़ान भर सके। इतिहास गवाह है कि भाषा की सर्वांगीन प्रगति में हमेशा पत्रिकाओं की एक निर्णायक भूमिका रही है। पत्रिकाएँ ही भाषा को समृद्ध कर एक विकसित समाज की नींव डालती है। पत्रिकाएँ समाज का दर्पण होती हैं। हमें इन पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी प्रगति अभियान में एक अग्रणी भूमिका निभानी है। हमारा यह अभियान तब पूरा होगा जब हरेक हिन्दुस्तानी के जुबाँ पर सिर्फ़ और सिर्फ हिन्दी होगी क्योंकि हिन्दी ही हिन्दुस्तानियों की पहचान है।

इस पत्रिका के माध्यम से मैं सभी हिन्दुस्तानियों को हिन्दी प्रगति अभियान में सक्रिय रूप से शामिल होने एवं हिन्दी को भारत माता की ताज़ बनाने के लिये निस्वार्थ योगदान की कामना करती हूँ।

मुझे पूर्ण आशा व विश्वास है कि मेरा यह संदेश पाठकों को हिन्दी के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का अहसास कराएगा एवं यह पत्रिका पाठकों को काफ़ी पसंद आयेगी।

पत्रिका को अधिकाधिक भावगर्भक बनाने के लिये अपने सुचिन्तित विचार एवं सुझाव से हमें अनुगृहित करें इस आशा के साथ

हिन्दी है हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा।

सूसन वर्गीस

सूसन वर्गीस
सहायक सचिव ग्रेड I (रा.भा)

आदतों को यदि रोका न जाए, तो वे शीघ्र ही लत बन जाती हैं।

क्वांटम ऑफ़ दी सीज़-खुशियों की लहर

"क्वांटम ऑफ़ दी सीज़" न्यूयॉर्क से शांघाई के लिये 54 दिन तक अपने वैश्विक यात्रा के दौरान 5 जून 2015 को पेनांग, मलेशिया के लिए रवाना होने से पहले 4 जून 2015 को कोचिन बंदरगाह में आया। दुबई से सिंगपुर के लिये 14-रात्रियों की जलयात्रा के दौरान भारत में कोचिन ही अकेला ऐसा बंदरगाह था जो इस ऐतिहासिक पोत का साक्षी बना।

गौरी एस. नायर
सचिव

"क्वांटम ऑफ़ दी सीज़" अपने अभूतपूर्व प्रौद्योगिकी के साथ यात्रा अनुभव को कई गुना बढ़ा देती है।

"क्वांटम ऑफ़ दी सीज़" सही अर्थ में एक नये युग का जहाज है। एक अपार्टमेंट समूह की समानता के साथ 18 मंजिल वाला यह 350 मिटर का जहाज अपने बोर्ड पर 18 विभिन्न होटेलों के साथ वास्तव में एक प्लवमान शहर है। अपने साथ दुनिया भर से करीब 4,000 हजार यात्रियों और कुल 167,800 टनधारिता क्षमता सम्पन्न भारत के किसी भी बंदरगाह में आनेवाला यह अब तक का सबसे बड़ा जहाज है। अपने आलीशान निजी कक्ष, सर्वाधिक विकसित प्रौद्योगिकी, अभूतपूर्व स्थल, सर्वाधिक सुव्यवस्थित भोजन विकल्प दुनिया के समुद्री पर्यटन संबंधी दुष्टिकोण को एक नये सिरे से परिभाषित करता है।

इस आलीशान जहाज में पहली बार स्काई डाइविंग सिम्युलेटर एवं समुद्र स्तर से करीब 300 फिट ऊंचाई पर कोई आभूषण आकार के आवरण की भाँति प्रतीयमान नर्थ स्टार जैसे कई अत्याधुनिक सुविधाएं हैं, जो अपने आप में अद्वितीय है। **"क्वांटम ऑफ़ दी सीज़"** की अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी एवं विलासपूर्ण सामग्रियाँ वास्तव में आश्चयपूर्ण है। इस आलीशान जहाज के केन्द्र स्थल पर अत्याधुनिक स्थल, बायोनिक बार एवं रोबो आदि की सुविधा है। अतिथिगण अपने लैपटॉप के माध्यम से अपना अर्डर प्रस्तुत करेंगे एवं उसके बाद रोबो द्वारा कॉकटेल मिश्रित शराब परोसते हुए देख सकते हैं।

आज विश्व के सर्वाधिक विकसित प्रौद्योगिकी से संपन्न अत्याधुनिक जहाज **"क्वांटम ऑफ़ दी सीज़"** का 04 जून, 2015 को कोचिन पोर्ट में आगमन पोर्ट के लिये एक ऐतिहासिक तथा गर्व का पल था जो पोर्ट के इतिहास में सदैव याद किया जायेगा। ❐❐

आलस्य में जीवन बिताना आत्महत्या के समान है।

सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है

हम हमेशा लोगों के दृष्टिकोण के बारे में बात करते हैं। यह दृष्टिकोण क्या है? दृष्टिकोण एक छोटी सी बात है जो बड़ा अंतर पैदा करता है। मानव अपने दृष्टिकोण को बदल कर अपने जीवन को बदल सकता है। अच्छे और बुरे दिन के बीच का अंतर आपका दृष्टिकोण ही है। सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने वाले मानव को अपने लक्ष्य प्राप्ति से कोई नहीं रोक सकता। हम मानते हैं कि हमारे दृष्टिकोण हमारे व्यवहार से ही आते हैं। दृष्टिकोण सही और गलत भी हो सकते हैं। अगर आप सही नजरिये से देखते हैं, तो पूरी दुनिया को एक बगीचे में खिलता हुआ देख सकते हैं। सही दृष्टिकोण जीवन के दैनिक मामलों को अधिक आसानी से सामना करने, स्वयं को आशावादी बनाने और सभी चिंताओं और बुरे विचारों से बचने का सहज मार्ग सुझाने में मदद करता है। इसे अपने जीवन का मार्ग के रूप में अपनाने से यह आपके जीवन में रचनात्मक परिवर्तन लायेगा और आपको अधिक सुखी, सफल और यशस्वी बनायेगा। गलत दृष्टिकोण हर चीज़ के लिये घृणा अथवा तिरस्कार द्वारा चित्रित होते हैं। गलत विचार संक्रामक होते हैं और गलत विचार सम्पन्न लोगों से बचना ही इसके निराकरण का सर्वोत्तम उपाय है। गलत दृष्टिकोण पंचर हुए टायरों की तरह होते हैं जिसे बदलने के बिना आप गंतव्य तक नहीं पहुंच सकते। गलत दृष्टिकोण के साथ आपका दिन कभी अच्छा नहीं हो सकता और अच्छे दृष्टिकोण के साथ आपका दिन कभी बूरा हो ही नहीं सकता। दृष्टिकोण एक मानसिक स्थिति है जो चिंतन के मार्ग से संबंधित है। जी हाँ यही तो दृष्टिकोण है। सही दृष्टिकोण से अपने वातावरण को प्रभावित करें। सुख और कल्याण को सुनिश्चित करने हेतु अभ्यास के लिये कुछ मंत्र नीचे दिये गये हैं।

1. चारों ओर मुस्कान फैलाओ और दुनिया को खुशियों से भर दो।
2. हर दिन की श्रेयता पर ध्यान दें।
3. कृपया और धन्यवाद कहना जारी रखें।
4. सहानुभूति का अभ्यास करें।
5. अपने आचरण का मूल्यांकन करें।
6. अभिवादन देना न भूलें।
7. नियम धारण करें।
8. आलोचना अथवा समीक्षा को सुधार का अवसर के रूप में स्वीकार करें।
9. विनोदिता को अपनायें।

अंत में "आपके दृष्टिकोण आपकी योग्यता नहीं है, यह आपकी प्रतिष्ठा को निर्धारित करेगा।"

गौरी एस. नायर, सचिव

❐❐

जीतने के लिये कोई चीज है तो -	प्रेम	लेने के लिये कोई चीज है तो -	ज्ञान
पीने के लिये कोई चीज है तो -	क्रोध	कहने के लिये कोई चीज है तो -	सत्य
खाने के लिये कोई चीज है तो -	गम	रखने के लिये कोई चीज है तो -	इज्जत
देने के लिये कोई चीज है तो -	दान	फेंकने के लिये कोई चीज है तो -	ईर्ष्या
दिखाने के लिये कोई चीज है तो -	दया	छोड़ने के लिये कोई चीज है तो -	मोह

आशा अमर है। उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।

सागरमाला और कोचिन पोर्ट

भारत के माननीय प्रधान मंत्री ने अपने पहले भाषण में वैश्विक व्यापार के लिए हमारे तटीय क्षेत्र को एक सशक्त माध्यम के रूप में अभिहित किया है। माननीय पोत परिवहन मंत्री श्री. नितिन गड़करी ने इस कार्यसूची को आगे बढ़ाया एवं लंबी अवधि योजनाओं को पहले की ताकि समुद्री आधारिक संरचना एवं नौवहन बाकी दुनिया के साथ भारत के आर्थिक व्यवसाय में एक निर्णायक भूमिका निभा सके।

डॉ.सी. उण्णिकृष्णन नायर
यातयात प्रबंधक

भारत ने अपनी तटरेखा एवं जल मार्गों से पर्याप्त आर्थिक लाभ नहीं लिया है। भारत और चीन में समुद्री क्षेत्र के विकास की तुलना नीचे दिये गए हैं:-

विकास क्षेत्र	भारत	चीन
कंटेनर यातायात (मिलियन टीईयू)	10	155
विश्व के शीर्ष 20 में पत्तनों की संख्या	0	9
शिपयार्डों की संख्या	7	70
घरेलू परिवहन में जलमार्गों के योगदान	2%	25%
औसत आवर्तन काल (दिन)	4.5	1

समुद्री क्षेत्र में लक्षित विकास को सुनिश्चित करने के सपने को साकार करने के लिए सागरमाला एक परिकलित प्रमुख रणनीति है। भारत के पास 13 समुद्री राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र तक फैली 7500 किमी से अधिक तट रेखा है। भारत के तटीय क्षेत्र के महत्व इसलिए है कि भारत की आबादी का 20% तटीय राज्यों में निवास कर रहे हैं एवं भारत के सकल घरेलू उत्पाद में इन समुद्री राज्यों का योगदान 60% से भी अधिक है।

निम्नलिखित गंभीर मामलों के कारण समुद्र क्षेत्र एक विकलांग क्षेत्र एक बन गया है।

1. पत्तनों में कमज़ोर बुनियादी ढांचे
2. निम्नमान के मशीनीकरण
3. अपर्याप्त डुबाव
4. और सीमित समुद्री तटक्षेत्र संयोजन

ये बाधाएं उत्पादकता को कम करते हैं और कार्गो के हस्तन एवं ढुलाई की लागत को बढ़ा देते हैं। यह पोर्ट में सीमित विनिर्माण एवं आर्थिक गतिविधियों को प्रेरित करता है। जिससे हम बहुत ही सीमित कौशल विकास और परिधीय व्यापार की साक्षी बनते हैं।

सागरमाला का केंद्रबिंदु है बंदरगाह विकास एवं बंदरगाह संचालित विकास। इसलिए हमारा प्राथमिक ध्यान बंदरगाह बुनियादी संरचना की वृद्धि पर केंद्रित है, जिसमें नई क्षमता के सृजन एवं गहन प्रवाह एवं कार्गो हस्तन के मशीनीकरण को सुनिश्चित करते हुए मौजूदा बंदरगाहों को विश्वस्तरीय बंदरगाह में परिवर्तन किया जाना शामिल है। अधिक सक्षम बंदरगाह, आपूर्ति श्रृंखला लागत को कम करते हुए विनिर्माण क्षेत्र के साथ कोर उद्योगों की प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होगा। अंतर्देशीय जलमार्ग और तटीय शिपिंग जैसे कम महंगे और पर्यावरण अनुकूल कार्गो चलन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। बंदरगाहों पर उच्च उत्पादकता एवं आपूर्ति श्रृंखला सम्मति को सुनिश्चित किया जाएगा। पोर्ट नेतृत्वाधीन विकास में पोर्ट संनिकटता पर तटीय आर्थिक क्षेत्रों का निर्माण भी शामिल है। तटीय आर्थिक क्षेत्र, बंदरगाह के आसपास समुद्री और विनिर्माण समूह पर ध्यान केन्द्रित करता है। तटीय आर्थिक क्षेत्र से बंदरगाह आधारित औद्योगीकरण को बढ़ावा मिलेगा, जो पत्तन सुविधाओं के साथ स्थल विशेष के प्राकृतिक लाभ को क्रियान्वित करता है। सागरमाला के अंतर्गत बंदरगाह से जुड़े मौजूदा रेल/सड़क नेटवर्क एवं अंतर्देशीय जलमार्ग के माध्यम से कुशल विकास ही तीसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

आत्मविश्वास का अभाव ही सभी अन्धविश्वासों का जनक है।

कोचिन पोर्ट के विकास योजना, सागरमाला अवधारणा के उद्देश्यों के साथ जुड़ा है। कोचिन पोर्ट ने ईडीपी प्रणाली को कार्यान्वित किया है, जो ग्राहकों , सीमाशुल्क एवं बैंक के साथ ऑनलाइन लेन-देन को सुसाध्य बना दिया है। यह एक पारदर्शी तरीके से वास्तविक काल निर्गम की सुविधा प्रदान करता है। कोचिन पोर्ट सभी पोर्ट गतिविधियों को सूचना प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ने वाला भारत का पहला महापत्तन है। पोर्ट एक कदम आगे निकलते हुए, अपने सभी प्रशासनिक कार्य मानव संसाधन प्रबंधन की संचार प्रौद्योगिकी प्रणाली के माध्यम से कर रहा है। कोचिन पोर्ट के पास अपने कंटेनर बर्थ में 14.5 मीटर का गहरा प्रवाह प्रवाह है, जो भारत के सबसे गहरा प्रवाहों में भी एक है। इससे बड़े महाद्वीपों में चलनेवाले बड़े जहाजों को कोचिन में बर्थिंग करने में मदद मिलेगा एवं अमेरिका और यूरोप में हमारे निर्यातकों के लिए प्रत्यक्ष नौकायन में सुविधा होगी। पोर्ट, लकड़ी जैसे अलग-अलग पेटियों में बंद माल के हस्तन में मशीनीकरण की ओर चल पड़ा है। मशीनीकरण से दुर्घटनाएं एवं क्षति कम हुई हैं एवं उत्पादकता में सुधार हुआ है। अब पोर्ट सीलो तंत्र की स्थापना द्वारा अनाज के यंत्रीकृत उतराई की ओर रुख किया है। यह प्रणाली तेज़, उतराई और चावल एवं गेहूं के सुरक्षित भंडारण में मदद करेगा।

बंदरगाह के नेतृत्व विकास के लिए कोचिन पोर्ट एक मुक्त व्यापार भंडारण क्षेत्र मुहैया किया है जिससे आपूर्ति श्रृंखला के लिए रसद प्रतिस्पर्धा में सुधार लाने में मदद मिलेगा। कोचिन पोर्ट में एक वर्ष में अधिकाधिक क्रूज पोत आते हैं और पोर्ट सुचारू पोतारोहण एवं पोतावरोहण सुविधा प्रदान करता है। हर साल 40 से अधिक क्रूज जहाज़ कोचिन पोर्ट में आते हैं। इस वर्ष 'क्वीन मेरी 2' एवं क्वांटम ऑफ द सीज' कोचिन में आए। इस क्रूज जहाज़ से करीब 30,000 से अधिक यात्री केरल में एक या दो दिन रहे, एवं यह पर्यटन के लिए एक अच्छा प्रोत्साहन है। पोर्ट ने हाल ही में आने वाली क्रूज यात्रियों की सुविधा के लिए स्वतः प्रवास निर्गम व्यवस्था शुरू किया है। यह किसी भी भारतीय पत्तनों में पहली बार शुरू की गई व्यवस्था है। अगले एक दशक में पोर्ट की भविष्य योजना में बाहरी हार्बर विकास शामिल है, जो कोचिन में पोर्ट आधारित उद्योगों के लिए बहुमूल्य औद्योगिकी भूमि प्रधान करेगा। पोर्ट के हार्बर क्षेत्र के उत्तरी एवं दक्षिण दिशा की ओर क्रमशः 2600 एकड़ एवं 650 एकड़ के दो भूक्षेत्र बनाने का प्रस्ताव है।

कोचिन पोर्ट दक्षिण केरल के कोल्लम पोर्ट एवं उत्तर केरल के अषीक्कल पोर्ट जैसे साटेलाइट पोर्ट केलिए छोटे कंटेनर जहाजों की सेवा शुरू करने की पहल की है। कोचिन पोर्ट व्यापार को प्रारम्भिक चरण में कठिनाइयों को दूर करने में उनकी मदद के लिए बंदरगाह शुल्क में भारी छूट द्वारा इन उद्यमों का समर्थन कर रहा है। इस प्रकार की तटीय सेवाएं, माल के अधिक आर्थिक निर्गम एवं मार्गों के असंकुलन में मदद करेगी। ❐❐

श्रद्धांजलि

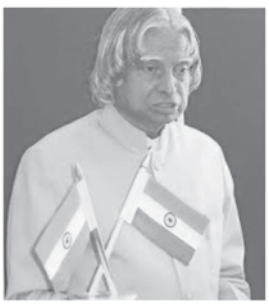

वह दिन दिन नहीं, वह रात रात नहीं,
वह पल पल नहीं, जिस पल आपकी याद नहीं,
आपकी यादों से मौत हमें अलग कर सके,
मौत की भी इतनी औकात नहीं।

सदियों के महामानव, विज्ञान मण्डल के जजल्वमान नक्षत्र
भारत रत्न डॉ. अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम को
कोचिन पोर्ट ट्रस्ट परिवार की ओर से शत शत नमन।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहतिपावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

इच्छा की प्यास कभी नहीं बुझती, न पूर्ण रूप से संतुष्ट होती है।

स्वातंत्रयोत्तर भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी

सरोज कुमार दास
मुख्य यांत्रिक अभियंता

भारतीय विज्ञान की परंपरा विश्व की प्राचीनतम वैज्ञानिक परंपराओं में से एक है। भारत में विज्ञान का उद्‌भव ईसा 3000 वर्ष पूर्व हुआ है। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त सिंध घाटी के प्रमाणों से वहाँ के लोगों की वैज्ञानिक दृष्टि तथा वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोगों का पता चलता है। प्राचीन काल में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में चरक और सुश्रुत, खगोल विज्ञान व गणित के क्षेत्र में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और आर्यभट्ट-द्वितीय और रसायन विज्ञान में नागार्जुन की खोजों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है। इनकी खोजों का प्रयोग आज भी किसी-न-किसी रूप में हो रहा है।

आज विज्ञान के विकसित स्वरूप ने इस संसार को एक नया आयाम दिया है। पूरी दुनिया में तेजी से वैज्ञानिक खोजें हो रही हैं। इन आधुनिक वैज्ञानिक खोजों की दौड़ में भारत के जगदीश चंद्र बसु, प्रफुल्ल चंद्र राय, सी. वी. रमण, सत्येंद्रनाथ बोस, मेघनाथ साहा, प्रशांतचंद्र, श्रीनिवास, रामानुजम, हरगोविंद खुराना आदि का वनस्पति, भौतिकी, गणित, रसायन, यांत्रिकी, चिकित्सा विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आधुनिक भारतीय विज्ञान की परम्परा का विकासः-

भारत में आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा का विकास मुख्य रूप से ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के बाद से शुरू हुआ। आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा प्राचीन वैज्ञानिक परंपरा से बहुत भिन्न नहीं है। बल्कि उसी को आगे बढ़ाने वाली एक कड़ी के रूप में विकसित हुई है। दोनों परंपराओं के विकास में एक मूलभूत अंतर है, वह है यांत्रिकी का विकास। प्राचीन भारतीय परंपरा ने विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में तो काफ़ी तेजी से विकास कर लिया था, किंतु यांत्रिकी यानी मशीनी स्तर पर कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल नहीं की थी। पूरे आधुनिक परिदृश्य को देखें तो आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है, यांत्रिकी का विकास। अब तक जो भी प्राचीन वैज्ञानिक उपलब्धियाँ थीं उन्हीं को आधार बनाते हुए यांत्रिकी का विकास किया गया और यह परंपरा पूरी दुनिया में प्रचलित हो गई। फिर यांत्रिकी के विकास से विज्ञान में नए अनुसंधानों के अनेक रास्ते खुले, जैसे-कंप्यूटर के विकास से रसायन, भौतिक, जीव विज्ञान आदि हर क्षेत्र में नए-नए प्रयोगों को एक नया आयाम मिला।

स्वातंत्रयोत्तर भारत के वैज्ञानिक उपलब्धियाँः-

आजादी के बाद जहाँ भारत ने समाज के हर क्षेत्र में तेजी से विकास किया वहीं विज्ञान के क्षेत्र में भी अनेक उपलब्धियाँ हासिल की। स्वतंत्र भारत की पहली सरकार में विज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों का एक पृथक मंत्रालय बनाया गया। यह मंत्रालय प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने अधीन रखा था। नेहरू जी भारत के बहुमुखी विकास के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए हर तरह के साधन और सुविधाएँ जुटाईं।

उपलब्ध क्षमता और प्रोत्साहन के कारण स्वतंत्रता प्राप्ति के 65 वर्षों में ही भारत ने विश्व की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी की महानतम शक्तियों में तीसरा स्थान प्राप्त कर लिया है। परिणामतः भारत कच्चे माल के निर्यात से अब विश्व की सर्वाधिक मजबूत औद्योगिक अर्थव्यवस्था में से एक बन गया है।

ईर्ष्यालू मनुष्य स्वयं ही ईर्ष्याग्नि में जलता है। उसे और जलाना व्यर्थ है।

भारत ने विज्ञान के अन्य विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। खगोल विज्ञान में प्राचीन अध्ययनों के आधार पर ही भारत के वैज्ञानिक अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यों में लगे हैं। आज भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिक अपने बलबूते पर स्वदेशी ज्ञान कौशल से उपग्रह बनाकर और अपने ही शक्तिशाली राकेटों से उन्हें अंतरिक्ष में स्थापित करने में समर्थ हैं। अंतरिक्ष कार्यक्रमों में भारत अपने बूते पर कई मील के पत्थर को पार किया है। भारत में अंतरिक्ष कार्यक्रमों में निरंतर विकास संचार के माध्यमों तथा प्रतिरक्षा संबंधी सफलताओं में काफ़ी सहायक सिद्ध हुआ है। आज भारत विभिन्न दूरियों तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र बनाने में समर्थ है। प्रतिरक्षा के क्षेत्र में आज हमें कई उल्लेखनीय सफलताएँ मिली हैं। वह दिन दूर नहीं जब पूरी दुनिया भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी की लोहा मानेगी।

भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भी आश्चर्यजनक प्रगति की है। परमाणु ऊर्जा का उपयोग मुख्यतः कृषि और चिकित्सा जैसे शांतिपूर्ण कार्यों के लिए किया जा रहा है। भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की है। परम 10000 सुपर कंप्यूटर बनाकर हम इस क्षेत्र में अग्रणी देशों की पंक्ति में आ गए हैं। हम अब सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित उपकरणों का निर्यात विकसित देशों को भी करने लगे हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधानों के बलबूते पर भारत ने जलयान निर्माण, रेलवे उपकरण, मोटर उद्योग, कपड़ा उद्योग आदि में आशातीत सफलता प्राप्त की है। आज हम भारत की उद्योगशालाओं में बनी अनेक वस्तुओं का विदेश में निर्यात करते हैं।

प्रौद्योगिकी अपने आप में एक अति व्यापक शब्द है। इसकी सर्वव्यापकता ने आज पूरी दुनिया को सीमट कर रख दिया है। आज भारत प्रौद्योगिकी के हर क्षेत्र में अपने बूते पर कई कीर्तिमान स्थापित किया है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तो भारत दुनिया के सबसे विकसित देशों में से एक माना जाता है। भारत में सूचना क्रांति के बाद इलेक्ट्रानिक तथा डिजीटल उपकरणों की सहायता से इस क्षेत्र में निरंतर प्रयोग हो रहे हैं। आज हमारे देश की हर गतिविधि में सूचना प्रौद्योगिकी की झलक दिखायी देती है। हमारे प्रधान मन्त्री द्वारा हाल ही में (01.07.2015) शुभारंभ किये गये "डिजिटल इण्डिया" इस कथन का स्पष्ट प्रमाण है।

जिस देश के विज्ञान और प्रौद्योगिकी जितना उन्नत है वह देश उतना विकसित है। वास्तव में मानव सभ्यता की प्रगति के लिये विज्ञान और प्रौद्योगिकी की अहमियता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। ❐❐

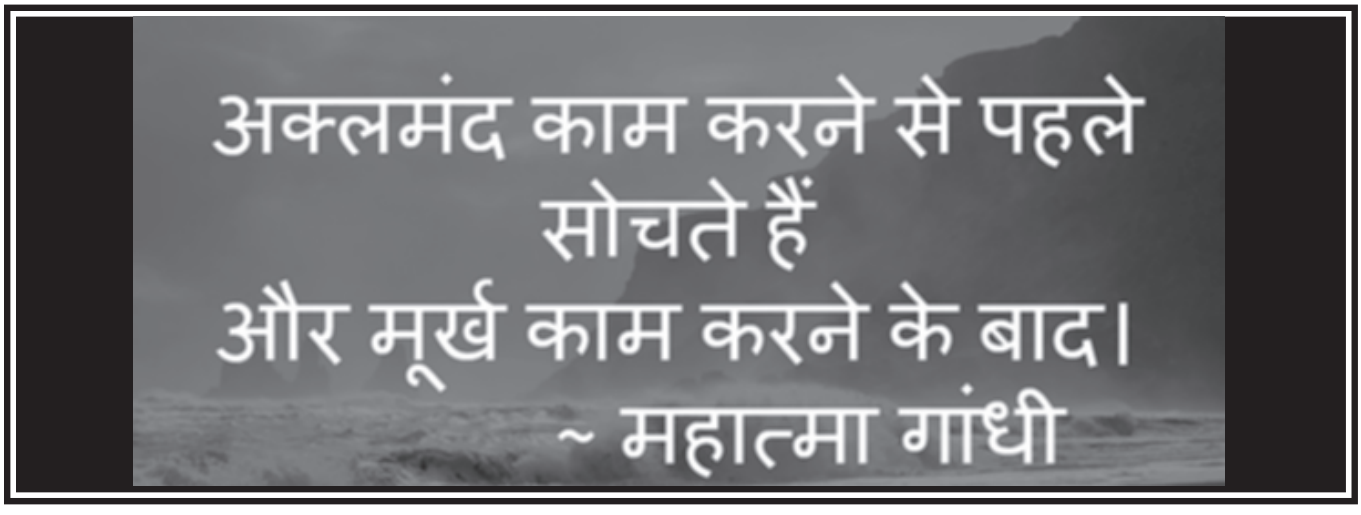

मनुष्य की प्रतिष्ठा ईमानदारी पर ही निर्भर है।

कच्चा चिकन की धुलाई आपको अस्पताल पहुंचा सकता है

डॉ. प्रहल्लाद पंडा
पूर्व मुख्य चिकित्सा अधिकारी

कई लोग यहाँ तक के मैं भी इस सत्य से अनभिज्ञ हैं कि कच्चा चिकेन की धुलाई हमको अस्पताल पहुंचा सकता है और हमें लंबे समय तक बीमार बना सकता है।

आंत्रशोथ के कुछ मामलों में, यह देखा जा रहा है कि, कुछ दिन पहले कच्चे चिकन धोने का इतिहास था। कैम्पिलोबैक्टर कहे जाने वाले एक जीवाणु को इसके लिये जिम्मेदार ठहराया जाता है।

चिकन, कैम्पिलोबैक्टर, के वाहक हैं, जो इसे धोते समय पानी के बूंदों के माध्यम से एवं इसे काटते समय कपबोर्ड, स्पंज एवं कपडे आदि एवं रसोई उपकरणों एवं हमारे हाथों द्वारा संदूषित होता है। रसोई नल में चिकन की धुलाई से एक मीटर की दूरी तक यह प्रभावित हो सकते हैं।

कुछ कैम्पिलोबैक्टर रोग एवं खाद्य विषाक्तता के कारक होते हैं। खाद्य विषाक्तता जैसे स्टाफीलोकोकस और ई-कोलाई आदि के कारक कुछ अन्य जीवाणु के विपरीत शीघ्र ही दूषित भोजन ग्रहण करने के मामले में यह उत्पन्न नहीं होते। ये उत्पन्न होने के लिए एक से पांच दिनों का समय ले सकते हैं। इनमें से आधे के मामले में बीमारी फ्लू जैसे लक्षणों के साथ 24 घंटों में शुरू होता है। यह धीरे-धीरे दस्त का रूप धारण कर लेता है, जिसमें खून आने लगते हैं, उल्टी, पेट दर्द और ऐंठन आदि भी होने लगते हैं। आमतौर पर, यह एक सप्ताह के आसपास रहता है। मुख्य समस्या यह है कि कोई भी इस तीव्र प्रकरण से ठीक हो सकता है परन्तु मरीज़ों के बारे में एक तिमाही में, बैक्टीरिया, अतिसंवेदनशील आंत्र सिंड्रोम (आईबीएस) जैसे कई स्थितियाँ पैदा कर सकते हैं। यह पेट के परत में एक अपरिवर्तनीय परिवर्तन की वजह से होता है जो कुछ मामलों में पिछले कई वर्षों से चलता रहता है। बैक्टीरिया द्वारा सृजित संभावित कारण एक ऐसा जहर है जो हमारे आंत्र के कार्य को बाधित करता है। संक्रमण भी पेट के अस्तर के नसों को नुकसान पहुंचा सकता है, जो पेट की गतिशीलता के लिए जिम्मेदार

सार्वजनिक बाजार में चिकन

ईश्वर ने सिर्फ़ दो जाति और एक धर्म बनाया है, वह है-स्त्री, पुरुष और मानव धर्म।

शिल्पकार

मरियाम्मा मात्यू
प्रबन्धक

हमारा अपना प्यारा कोचिन बन्दरगाह
हमारे देश की अपने ही बन्दरगाह
चारों ओर पानी से भरे हुए
नयनांनद मनोहर यह बन्दरगाह

अधिकार श्रेष्ठ विल्लिंगडन प्रभु
उन्हीं दिन में शोभित प्रमुख नागरिक
एकत्रित होकर देखा यह सुंदर स्वप्न
देश की उन्नति का हुआ शुभारंभ

कर्मकुशल सर रोबर्ट ब्रिस्टो के
कठोर प्रयत्न से निर्मित बन्दरगाह
देश देशवासियों के विविध मज़दूरों से
बोकर सींचित पालापोसा संगठन
काफी, कालीमिर्च इलायची जैसी
अपने देश की ही मूल्य खाद्यान्न
विविध तरह के संपन्न मत्स्य को
निर्यात करके हम पाते हैं विदेशी कमाई

विविध तरह के तेल उत्पन्न
विविध अनेक सामग्रियों को
आयात करके वितरण करती है यह-
संस्था सेवा बहूत करती रही है
महल तुल्य ऐसी जहाज़ों में
संपन्न राष्ट्र के बच्चों को
ईश्वर के अपने राष्ट्र में आने की
रास्ता होती है यह बन्दरगाह

देश के अभिमान की इस लक्ष्य में
भूतकाल के यश को पुनः लाने केलिए
एक साथ मिलकर परिश्रम करके आगे बढ़ेंगे
देश की ख्याति आसमान तक फैल जाए।

शांतिमयी सागर रानी को
कमनीय मुकुट पहनाने वाला
आदरणीय सर रॉबर्ट ब्रिस्टो को
सादर समर्पित करने होती है ये पंक्तियां। ❐❐

एवं बदल मलोत्सर्ग के कारक हैं और जठरांत्र संबंधी मार्ग में दर्द के बारे में जागरूकता में वृद्धि करती है। कैम्पिलोबैक्टर संक्रमण के मामलें के करीब 1 प्रतिशत 'प्रतिक्रियाशील' गठिया के कारक बन सकता है, जो आमतौर पर अल्पावधि के लिये होते हैं परन्तु कभी कभी यह स्थायी बन जाते हैं। यह संक्रमण के चलते सूजन-लाली, एवं फुलाव आदि शुरू हो जाता है। यह सबसे अधिक जोड़ों (दर्द और जकड़न), आँखें (नेत्र श्लेष्मलाशोथ के कारक) एवं मूत्रमार्ग (पेशाब करते समय दर्द के कारक), को प्रभावित करता है। गठिया के क्लासिक त्रिक, मूत्रमार्ग और नेत्रश्लेष्मलाशोथ, को रेइटर के सिंड्रोम कहा जाता है। एक और अधिक खतरनाक स्थिति यह है कि गुईलाईन-बैरी सिंड्रोम, दृढ़ता से कैम्पिलोबैक्टर से जुडा हुआ है। हालांकि विरल है, यह आम तौर पर एक वायरल या बैक्टीरियल संक्रमण के बाद होता है, जो तंत्रिका के जड़ों और परिधीय नसों पर हमला करने केलिए प्रतिरक्षा प्रणाली को गति प्रदान कर सकते हैं, जो आंशिक पक्षाघात और कभी कभी मौत के कारण भी बन सकते हैं। एक वर्ष में करीब 1,200 लोग इसके शिकार होते हैं। जब कोई कैम्पिलोबैक्टर विषाक्त भोजन या गंभीर जटिलताओं, प्राप्त करता है पांच वर्षों से कम बच्चें एवं 60 साल से अधिक बुजुर्गों के मामलों में खतरा थोड़ा बढ़ जाता है क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होते हैं। सी जेजुनी और सी कोलाई अक्सर मानव रोगों में पाये जाते हैं।

संदेश :

- आमतौर पर मुर्गी और गाय जैसे गरम खून वाले जानवरों की आंतों में बैक्टीरिया निवास करते हैं और अक्सर इन जानवरों से उत्पन्न खाद्य पदार्थों में पाये जाते हैं।
- कैम्पिलोबैक्टर प्रजातियों को गर्मी और अच्छी तरह से खाना पकाने के द्वारा मारा जा सकता है।
- कैम्पिलोबैक्टर संक्रमण को रोकने के लिए, भोजन तैयार करते समय मौलिक खाद्य स्वच्छता कार्यप्रणाली के पालन को सुनिश्चित करें। ❐❐

उपदेश ऐसा वस्तु है जिसे सब देना चाहते हैं, लेना कोई नहीं चाहता।

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में सुरक्षा सप्ताह समारोह

राष्ट्रीय सुरक्षा दिन/सप्ताह समारोह के एक अंश के रूप में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में 4 से 10 मार्च, 2015 तक विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सुरक्षा सप्ताह समारोह मनाया गया।

पोर्ट एवं डॉक क्षेत्र के प्रमुख स्थानों पर सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के महत्व को चित्रित करते बैनरों और पोस्टरों का प्रदर्शन किया था और पोर्ट तथा डॉक कामगारों के बीच व्यापक प्रचार-प्रसार भी किया गया था।

4 मार्च बुधवार को 11.00 बजे श्री. के.जी. नाथ, वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट ने एरणाकुलम वार्फ में सुरक्षा ध्वज फहराया। श्री. के. कुज्ञाली. मुख्य यांत्रिक अभियंता (प्रभारी), कोचिन पोर्ट ट्रस्ट ने सुरक्षा शपथ लिया। इस समारोह में कप्तान पोल एन.जोसफ, उप संरक्षक, श्री. गुरु. प्रसाद रॉय, मुख्य अभियंता, डॉ.सी. उण्णिकृष्णन नायर, यातायात प्रबंधक, उप विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी, कामगारों और कर्मचारियां उपस्थित थे। उसी समय में ही कोचिन पोर्ट परिसर के विभिन्न स्थलों पर सुरक्षा शपथ लिया गया। उसी दिन 13.30 बजे एरणाकुलम वार्फ के कॉल स्टांट में एक बैठक आयोजित किया गया तथा डॉ. सी. उण्णिकृष्णन नायर, यातायात प्रबंधक, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट की उपस्थिति में सुरक्षा शपथ लिया गया है। उक्त कार्यक्रम में अधिकारियों एवं डॉक कामगारों ने भाग लिया।

श्री के.जी. नाथ, वित्तीय सलाहकार एवं मु.ले.अ. सुरक्षा ध्वज फहराते हुए।

समारोह के एक अंश के रूप में सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण शीर्षक पर पोर्ट कर्मचारियों के बीच अनुवर्ती दिनों में निबंध लेखन, भाषण तथा क्विज़ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इसके अलावा, "स्वास्थ्य, स्वास्थ्यकर परिवेश एवं प्रथम उपचार पर प्रशासनिक भवन के सम्मेलन कक्ष में डॉ. ए.पी. सुधीर, चिकित्सा अधिकारी, कोचीन पोर्ट ट्रस्ट द्वारा 10 मार्च, 2015 को एक प्रस्तुति प्रदर्शन किया गया।

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उच्च पदाधिकारीगण सुरक्षा शपथ लेते हुए।

10 मार्च को समापन समारोह में श्री. के. कुज्ञाली, मुख्य यांत्रिक अभियंता ने अध्यक्षता की और श्री. जिम्मी जोर्ज, यातायात प्रबन्धक (प्रभारी) ने स्वागत भाषण दिया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री. के.जी. नाथ, वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी ने सुरक्षा संदेश दिया। श्री. गुरु.प्रसाद.रॉय, मुख्य अभियंता ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया। सहायक निदेशक (सुरक्षा), डॉक सुरक्षा निरीक्षणालय ने बधाई भाषण दिया। सभी विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी, कामगार, कर्मचारी और कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के सुरक्षा समिति के सदस्यों ने समारोह में उपस्थित थे।

सुरक्षा अधिकारी

❑❑

बिना उत्साह के कोई महान् उपलब्धि कभी हासिल नहीं होती।

दूरदर्शन एवं चुनाव

डॉ.मुत्तुकोया
वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी

लक्षद्वीप से प्री-डिग्री उत्तीर्ण करने के बाद मैं सन् 1982 में एम.बी.बी.एस. पढ़ने के लिए मैं कोट्टयम मेडिकल कॉलेज में दाखिल हुआ। 1984-85 के दौरान, तृतीय वर्ष पढ़ते समय एक खास अवसर पर मुझे कॉलेज होस्टल के सचिव पद वहन करना पड़ा। उस समय के.एम.सी. में कॉलेज और होस्टल विद्यार्थियों के बीच में राजनीति नहीं था। कॉलेज चुनाव के लिए केवल दो पैनल ही थे। एक होस्टल में रहने वाले और दूसरा होस्टल के बाहर जो अपने घर या किराए घर पर रहते थे। होस्टल में रहने वाले विद्यार्थियों को छेड़ छाड़ पसंद नहीं था वे लोग सिर्फ बाहर के लोगों को सहारा देते थे। इसलिए होस्टल में रहने वाले लोगों का जीतना बहुत मुश्किल था। पुरुष होस्टल में रहने वालों के बर्ताव लेडिज़ होस्टल के विद्यार्थिनियों को पसंद नहीं था। बाहर के लोग देखने में बहुत सुंदर, अच्छी तरह पढ़नेवाले और सत्स्वभाव आदि गुणों से आगे थे। ऊपर बताए गए परिप्रेक्ष में कॉलेज होस्टल जीवन आगे बढ़ रहा था। लड़के-लडकियों की दोस्ती साझेदारी में किसी प्रकार की झंझड़ नहीं थी। मगर कॉलेज चुनाव के समय लडकियों के मतधारी अधिकतम पुरुष होस्टल पैनल के विरुद्ध थे। इसी कारण होस्टल पैनल कॉलेज चुनाव में विरल ही जीतते थे।

चुनाव या उसके संघ प्रवृत्तियों पर मुझे तब और अब भी दिलचस्पी नहीं है। एक दिन मेरे दोस्तों ने कमरे में आकर मुझसे बाताया कि "इस बार तुझे ही हमने एकमत से होस्टल सचिव पद पर चुनने का निर्णय लिया है। मैने कठोर शब्द में मना किया लेकिन मैं हार गया। अंत में मैं ने उनसे बताया कि ठीक है मैं वोट माँगने या कुछ काम के लिए नहीं आऊँगा। सच बताऊँ तो उन लोगों ने उनके किसी दुश्मन को हराने के लिए मुझे चुना था। पांचवी वर्ष के एक विद्यार्थी ने मेरी प्रतिस्पर्धी होकर नामांकन दिया। मेरे लिए अपने संपूर्ण बैच प्रचार किया और मैं जीत गया। लक्षद्वीप के होने के नाते मुझे लोक परिचय ज़्यादातर भाषा की जानकारी नहीं थी इसलिए मुझे सामने रखकर बाकी लोग मुझसे लाभ उठाना चाहते थे। लेकिन मैं ने बहुत जल्दी सब कुछ पढ़ लिया और गेंद को मेरे कॉर्ट पर लाया।

ठीक उसी समय 1985 में ओलिंपिक्स हुआ। याद नहीं है फिर भी कुछ लिख रहा हूं। उस समय कोट्टयम में एक भी दूरदर्शन नहीं था। लेकिन एरणाकुलम में दूरदर्शन का प्रचार हो रहा था।

मैं ने एक समिति बैठक आयोजित करके वार्डन और सहायक वार्डन को भी आमांत्रित किया। आज सिर्फ एक ही कार्यसूची है ओलिंपिक्स देखने केलिए एक दूरदर्शन खरीदना। सब आश्चर्य चकित होकर बैठे। वार्डन ने (एक प्रोफेसर) साफ़ साफ़ इनकार किया। उस समय दूरदर्शन के बारे में सुना ही था और खरीदने के बाद वे ठीक तरह से देख नहीं पाते तो उसका भी बेचैनी थी।

महापुरुष वही होते हैं, जिनके उद्देश्य महान् होते हैं।

सच बताऊँ तो ओलिंपिक्स या दूरदर्शन के बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं थी या विशेषकर मुझे भी। जब मैं एरणाकुलम एम.जी. रोड़ से चलता तब दूकान के सामने टी.वी. देखकर चकित रहता था। वहां के बिक्रीकारी किसी ग्राहक से दूरदर्शन के संबंध में बोलते सुनकर मुझे भी टी.वी. खरीदने का आग्रह हुआ। होस्टल में लोगों से जब मैं ने टी.वी. के बारे में बताया तो उन लोगों ने मुझे खूशी से गले लगाया। लेकिन वार्डन इसका कठोर विरोध करते ही रहे। फिर मैं ने सहायक वार्डन के क्वार्टर जाकर उससे बात किया वे बहुत खूशी से वार्डन से और एक बार बातचीत करके अनुमति पाने का वादा किया। इससे संबंधित जो भी कठिनाइयां आ जाएगी उसे झेलनी पडेगी कि शर्त पर आखिर वार्डन ने अनुमति दी। इसमें से संबंधित जो भी कठिनाइयां आ जाएगी उसे झेलना पड़ेगी। शर्त पर आखिर वार्डन ने अनुमति दी। इस प्रकार कोट्टयम के ही प्रथमवाला दूरदर्शन मैं ने एरणाकुलम आके खरीदा। 10,000 रुपए देकर सोलार नाम का एक टी.वी. खरीदा। अच्छे किस्म का टी.वी. तो बहुत महंगी थी। सोलार नाम का टी.वी. उसके पहले या बाद में मैं ने सुना तक नहीं था।

पहले के दो तीन दिनों में आंटीना उलट पलट कर के देखते थे। मगर उसका क्लारीटी बहुत कम था। कुछ देख नहीं पा रहे थे। कैटेरैक्ट बाधित आदमी का दूरदर्शन देखने जैसी अवस्था हो गई। इसलिए टी.वी. खरीदने के प्रस्ताव से विरोध प्रकट किए होस्टलवालों एवं वार्डन से मुझे गाली सुननी पड़ी। एरणाकुलम आकर मैं ने एक मेक्कानिक को साथ लेकर कोट्टयम पहुंचा। उसने बताया कि पुरुष होस्टल ऊँचे स्थल में होने के कारण चित्र स्पष्ट नहीं देख पाते हैं। एक आंटीना रखने से सभी झंझट दूर हो जायेगा। वार्डन ने भी इस मद पर सहमति प्रकट की। वो टी.वी. ठीक कर दिया।

अगले दिन ही ओलिंपिक्स का उद्घाटन समारोह था। मैं ने सभी से बताया कि हमारे पास के होस्टल के लड़कियों को भी बुलाना चाहिए। सब खुश हुए। लड़कियां भी बहुत खुश हुई। वार्डन से भी अनुमति मांगी। लड़कियों के लिए ज़्यादातर अच्छा स्थान भी रखे गए। टी.वी. ही एक अजनबी थी उसके ऊपर ओलिपिक्स समारोह तत्समय देखना और भी खुशी की बात थी। इसप्रकार लड़के-लडकियों के होस्टलवालों को ओलिपिक्स समारोह देखना उत्सव जैसा हो गया।

उसी साल मेरे नेतृत्व पर होस्टल दिन संयुक्त होस्टल दिन के रूप में मनाया गया। मंच पर पुरुष होस्टल के सचिव ने स्वागत भाषण और महिला होस्टल के सचिव धन्यवाद अर्पण किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में सिनेमा जगत के अभिनेता श्री जयराम ही पधारे थे। उसके द्वारा मिमिक्री अभिनय दिखाया गया। एरणाकुलम के कलाभवन मिमिक्स परेड़ को भी हमने कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया था।

उसके बाद पूरे चुनाव में कॉलेज पैनल (लड़कियों की पूरी सहमति से) अधिकांश मतधारकों के साथ जीतती थी। एरणाकुलम के आज के मशहूर कार्डियोलजिस्ट उस समय कॉलेज यूनियन की आर्ट्स क्लब सचिव के पद पर जीते थे। केरल के प्रथम हृदय ट्रांसप्लांटेशन ऑपरेशन किए कार्डियोलजिस्ट हमारे होस्टल की आखिरी साल के विद्यार्थी थे।

मेरे प्रथम दूरदर्शन खरीदने का अनुभव हमेशा याद रखनेवाला एक महान वरदान के रूप में आपके साथ शेयर करता हूं। जीवन में खोकर पाए जानेवाले एक सौभाग्य के समान इसे देख पाते हैं। ❐❐

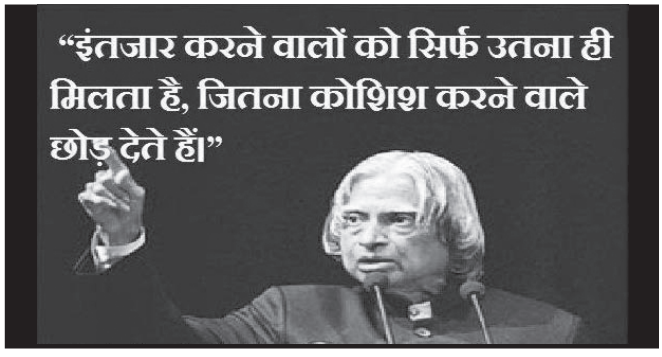

कर्म वह दर्पण है, जिसमें हमारा भविष्य का प्रतिबिंब दिखता है।

माँ तेरे लिए

रितिका राजेश
तिबिना, लेखाकार की सुपुत्री

एक मधुर हंसी आपकी
देखना चाहता हूं मैं, माँ।
एक सुंदर हंसी आपकी
जैसे रात में चमकते तारे।
उससे ही खिल उठेगा
मेरा यह कठोर मन।
हाँ, मै कठोर हूँ
क्यों कि मैं ने इस दुनिया
का सबसे बड़ा पाप किया था
मैं ने मेरे माँ को छोड़ दिया था।
एक ऐसी जगह जहां पे
मेरे जैसे अनेक पापियों
अपने माँ-बाप को भेज देते हैं।
एक ऐसी जगह जहां
कोई नहीं जाना चाहता।
मैं जानता हूँ, कि मैं क्षमा योग्य नहीं हूँ,
पर फिर भी आपने मुझे क्षमा किया।
एक मधुर हंसी, दिखाओ मेरी माँ
जिससे मुझे संतोष आएगा।
और आपको भी संतोष आएगा।
यही मैं कर सकता हूँ,
माँ, तेरे लिए।

मेरी प्यारी माँ,
तुमने ही मुझे वह नाम दिया था,
जिससे सब लोग मुझे
राम, बुलाते हैं।
आप ने ही मुझे खाना खिलाया था,
आप ने ही मुझे बोलना सिखाया था
आपने ही मुझे नहाया, पिलाया
और आपने ही मेरा देखभाल किया
जब मेरे पापा ने मुझे छोड़ दिया था।
आज मैं जो कुछ भी हूँ,
वह सब तुम्हारी ही
मेहनत का फल है।
और मैं ने दुख पहूंचाया।
मुझे क्षमा करो माँ।
एक मधुर हंसी दिखाओ माँ
जिससे मुझे संतोष आएगा
और आपको भी संतोष आएगा।
यही मैं कर सकता हूँ
माँ, तेरे लिए।
एक लड़की केलिए,
जिसने मेरी जिंदगी पर आयी थी
कुछ दिन पहले,
मैं ने आपको छोड़ दिया था।
मैं ने देखा था
आपका दुख, उस समय पर,
आप रो रही थी।
पर मेरे मूर्ख मन उस दिन
वह पहचाना नहीं।
और फिर जब ईश्वर ने
मुझे सही रास्ता दिखाया,
और मैं ने आपको बुलाया
तो आप के गालों में
खूशी के आंसू थे।
मुझे क्षमा करो माँ.
एक मधुर हंसी दिखाओ माँ
जिससे मुझे संतोष आएगा
और आपको भी संतोष आएगा।
यहीं मैं कर सकता हूँ
माँ तेरे लिए।
मैं जानता हूँ, कि आपने मूझे क्षमा किया।
अब मेरा दिल यही मांगता है
कि अब मैं मेरा जीवन
समर्पित करूं आपको।
सदा रहूँ आपके चरणों में
आपको हंसाऊं, खिलाऊँ
और आपको दुख न पहुँचाऊँ।
आपने मेरे देखभाल किया था
मेरे पहले बाल्य में
और आपका देखभाल मैं करूँगा
आपकी दूसरी बाल्य में।
यहीं मैं करना चाहता हूँ
मेरे आनेवाली जीवन में
और एक मधुर हंसी दिखाओं, माँ
जिससे मुझे संतोष आएगा,
और आपको भी संतोष आएगा,
यहीं मैं कर सकता हूँ
और करना भी चाहता हूँ,
माँ, तेरे लिए। ❑❑

क्रोध कभी अकारण नहीं आता परन्तु शायद ही वह कारण कभी यथार्थ होता है।

बुनियादी आग

बीर बहादुर मौर्य
उप अधिकारी, अग्निशमन सेवा
कोचिन पोर्ट ट्रस्ट

भारत दुनिया के उन उभरते हुए विकासशील देशों में से एक है जहां दिन-व-दिन नभश्चुंभी इमारतों का निर्माण हो रहे हैं। इन ऊँची ऊँची इमारतों में आजकल सुरक्षा को सर्वाधिक प्राथमिकता दी जा रही है। इनमें से आगजनी से सुरक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस आकस्मिक आपदा से मानव को अपनी संपत्ति और अपने प्राण भी गवाना पड़ता है। जागरूकता अथवा सचेतनता के द्वारा इस आपदा से बचा जा सकता है। ऑक्सिजन और इंधन आग के मुख्य कारक हैं। एक ही समय पर इन दोनों की मौजूदगी आग लगने के मुख्य कारण है। इन दोनों में से किसी एक के निवारण से आग को नियंत्रण किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर आंशिक रूप से पानी से भरा हुआ एक ट्रे लें, ट्रे के केंद्र में तीन मोमबत्ती धारकों पर जलती हुई मोमबत्तियां रखें। पहली मोमबत्ती पर एक खाली बोतल उल्टा करके रखें। इस प्रकार पहली मोमबत्ती का बाहरी हवा से संपर्क नहीं रहता और ऑक्सिजन मोमबत्ती तक पहूंच नहीं पाती और इस कारण मोमबत्ती बुझ जाती है।

2. दूसरी मोमबत्ती की लौ पर पानी डाले इससे मोमबत्ती की लौ के तापमान गिर जाएगा और मोमबत्ती बुझ जाएगी।

3. तीसरी मोमबत्ती के लिए मोमबत्ती के मोम को हटा दें, मोम, मोमबत्ती के लिए इंधन था और इंधन की कभी के कारण मोमबत्ती बुझ जाती है। इंधन के आधार पर आग के वर्गीकरण निम्न प्रकार हैः

"ए" ग्रूप आगः साधारण दहनशील सामग्री की आग। जैसे-लकड़ी, कागज़, कपड़ा।

पानी का उपयोग कर, हम इस प्रकार के आग को बुझा सकते हैं।

"बि" ग्रूप आगः ज्वलनशील तरल पदार्थों में आग। जैसे-तेजाब, जैविक विलायक, पेट्रोलियम उत्पाद, वार्निश, पेंट। ऑक्सिज़न का संपर्क हटा कर, हम इस आग बुझा सकते हैं।

"सी" ग्रूप आगः गैसीय पदार्थों में लगी हुई, आग। जैसे-रसोई गैस, प्राकृतिक गैस, प्रोपेन, एसिटिलीन, मीथेन, ब्यूटेन। डीसीपी गैस से जलने वाली गैस को कमजोर करने की आवश्यकता हैं।

"डी" ग्रूप आगः दहनशील धातु की आग। जैसे-मैग्रीशियम, अल्युमीनियम, जस्ता, सोडियम, पोटैशियम।

विशेष प्रकार के पाउडर का इस्तेमाल किया जाता है। (टीईसी)

छोटी आग बुझाने का यंत्र-अग्निशमक यंत्र

वाटर सीओटू अग्निशमक यंत्र-"ए" ग्रूप आग पर उपयोगी।

फोम अग्निशमक यंत्र-बी" ग्रूप और "ए" ग्रूप आग पर उपयोगी।

कार्बन डाइऑक्साइड़ अग्निशमक यंत्र-बी" ग्रूप और "सी" ग्रूप आग पर उपयोगी।

ड्राई केमिकल पाउडर अग्निशमक यंत्र - "सी" ग्रूप और "डी" ग्रूप आग (टीईसी) पर उपयोगी।

अग्निशमक यंत्र का संचालन-

1) पिन को हटाएँ।
2) आग को निशाना बनायें।
3) प्लंजर दबाएँ/कार्बन डाइऑक्साइड़ अग्निशमक यंत्र के लिए, वाल्व को वामावर्त घुमाएँ। (कार्बन डाइऑक्साइड़ अग्निशमक यंत्र का वाल्व बंद करने के लिए, इसे दक्षिणावर्त घुमाएँ।) ❐❐

क्रोध सदैव मूर्खता से शुरू और पश्चात्ताप पर अंत होता है।

17 जूलाई, 2015 को सचिव (पोत परिवहन मंत्रालय) का कोचिन पोर्ट ट्रस्ट दौरा।

09 सितम्बर, 2015 को केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली का कोचिन पोर्ट ट्रस्ट दौरा।

अमेरिका के राष्ट्रपति के कार्यकारी कार्यालय से व्यापार प्रतिनिधिमंडल का कोचिन पोर्ट ट्रस्ट दौरा।

साल भर बंकरिंग के लिये नया जहाज़।

31 अक्तूबर, 2014 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में स्वच्छ भारत अभियान

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में "ओणम समारोह"

कोचिन टोलिक के संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समारोह

कोचिन पोर्ट के हिन्दी परिवार

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट नर्सिंग स्कूल के दीप प्रज्वलन समारोह

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में हिन्दी पखवाड़ा समारोह

भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी और यूनिकोड

मानस रंजन त्रिपाठी
हिन्दी अनुवादक

भाषा मानव जाति को ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है। भाषा ही मानव को अन्य प्राणियों से पृथक कर उसे एक विशेष पहचान प्रदान करता है। वैसे तो भारत में कई सारी भाषाएँ बोली और समझी जाती हैं, परंतु भारतीय संविधान ने 22 मुख्य भाषाओं को अपनी आँठवीं अनुसूची में शामिल किया है। भाषा के प्राक् इतिहास को अगर हम देखें तो भारत में भाषाओं का निरंतर प्रगति हुई है। भाषा के क्षेत्र में रोज़ नए नए शोध और प्रयोग किये जाते हैं। जब सूचना प्रौद्योगिकी और भारतीय भाषाओं पर चिंतन किया जाता है, तब भारतीय भाषाओं के कंप्यूटरीकरण पर ज़ोर दिया जाता है। अब भारत के कई प्रमुख विश्वविद्यालयों में भाषा प्रौद्योगिकी पर अध्ययन एवं अनुसंधान किये जाने लगे हैं। भारतीय भाषाओं के लिए विभिन्न आई.टी. कंपनियों ने विभिन्न प्रकार के भाषायी सॉफ्टवेयर, विविध प्रकार के फ़ॉन्ट, सुविधाजनक की- बोर्ड, फ़ॉन्ट रूपांतरण, ई-शब्दकोश आदि कई उपकरण तैयार किये हैं। यूनिकोड कंसोर्टियम अर्गानाईजेसन ने भारतीय भाषाओं के लिए यूनिकोड तैयार कर भारतीय भाषाओं की फ़ॉन्ट समस्या पर विराम लगाया है। यूनिकोड के माध्यम से आज इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की सुंदर लिपि उपलब्ध है। आज यूनिकोड के माध्यम से भारत के सभी क्षेत्रीय भाषाओं को कंप्यूटर में आसानी से टाइप किया जा सकता है। इस क्रम में आज भारतीय भाषाओं की गरिमा विश्वस्तर पर छाई है। आज के इस प्रौद्योगिकी की दौड़ ने भारतीय भाषाओं को तेजी से विकसित कर उसे एक नया आयाम दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी तथा यांत्रिक उपकरण (कंप्यूटर, मोबाइल आदि) के माध्यम से भाषा का संप्रेषण तेजी से विकसित हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन में भारतीय भाषाओं का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

भाषा प्रौद्योगिकी की संकल्पना : भारत में भारतीय भाषाओं के परिप्रेक्ष में सूचना प्रौद्योगिकी को लागू करने के लिए लिपि एक प्रमुख समस्या थी, भाषा प्रौद्योगिकी की संकल्पना का अविर्भाव केवल भारत में नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर स्थापित हुआ। भारत में भाषा प्रौद्योगिकी की पहचान सन् 1979 में डी. आई द्वारा आयोजित "कंप्यूटर पर आधारित सूचना प्रोसेसिंग की भाषाई जटिलतायें" नामक संगोष्ठी से की गई। पहले भारतीय भाषा के किसी वेबसाइट को देखने के लिए हमें फ़ॉन्ट को डाउनलोड करते हुए कंप्यूटर पर इंस्टॉल करना पड़ता था। परंतु यूनिकोड के प्रयोग में फ़ॉन्ट की समस्या से मुक्ति मिली एवं भारतीय भाषाओं में वेबसाइट और ब्लॉक बनाने में मदद मिली।

भारतीय भाषाओं की लिपि और प्रौद्योगिकी: भारतीय भाषाओं के प्रौद्योगिकी विकास में भारत सरकार एवं विभिन्न प्रौद्योगिकी संस्थान जैसे आई.आई.टी., कानपूर, उन्नत कम्प्यूटिंग के लिए विकास केंद्र (सी.डैक), पूणे निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

भारतीय भाषाओं के प्रौद्योगिकी विकास के लिए भारतीय लिपियों में एकरूपता स्थापित करना सबसे बड़ी चुनौती थी। इस क्रम में सन् 1983 में इलेक्ट्रानिक्स विभाग, भारत सरकार ने इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड का प्रकाशन किया। इस की-बोर्ड में सभी भारतीय भाषाओं के लिए समान कुंजियों का प्रयोग किया जाता है। भारतीय मानक ब्यूरो ने सन् 1991 में इस्कि (**ISCII-Indian Script Code for Information Interchange**) कोड के अंतर्गत सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक ही की-बोर्ड, अर्थात् इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड को मानकीकरण किया है। भारतीय लिपियों के लिए इनस्क्रिप्ट की बोर्ड को मानकीकरण किया है। भारतीय लिपियों के लिए इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड,

वर्णाक्षरों को वैज्ञानिक एवं ध्वन्यात्मक प्रकृति के साथ प्रयोग करता है। यह की-बोर्ड उपयोगकर्ता को व्याकरण सम्मत त्रृटियों से बचाता है। भारत सरकार के इलेक्ट्रोनिक विभाग ने भारतीय भाषाओं के लिए सॉफ्टवेर निर्माताओं एवं मोबाइल फोन कंपनियों को इस मानक की-बोर्ड के प्रयोग को अनिवार्य कर दिया है।

भारतीय भाषाओं की वर्तनी एवं शब्द भण्डार: भारतीय भाषाओं की वर्तनी एवं शब्दों के लिए पर्यायी, विपरीतार्थ और बहुभाषी शब्द आदि के लिए भाषा प्रौद्योगिकी में सबसे बड़ी चुनौती थी, एक लंबे अर्से से निरंतर शोध के परिणाम स्वरूप दुनिया के दिग्गज सॉफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने भारतीय भाषाओं के लिए अपनी साइट **www.bhashaindia.com** पर सभी भारतीय भाषाओं के लिए शब्द-भण्डार जैसे हिन्दी से अंग्रेजी, अंग्रेजी से हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में द्विभाषी (Smart Tag) बनाया है। स्मार्ट टैग को आसानी से कंप्यूटर पर संस्थापित किया जा सकता है। स्मार्ट टैग यूनिकोड समर्थित होने के कारण ऑफिसवर्शन में आसानी से काम करता है।

भारतीय भाषाओं के फ़ॉन्ट: भाषाओं के सॉफ्टवेयर निर्माता कंपनियों ने कॉर्पोरेट लाइसेंस के आधार पर भारतीय भाषाओं के लिए कई फ़ॉन्ट तैयार किए हैं। भाषाई अनुसंधान एवं प्रयोग में जुटे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सी-डैक जैसे महत्वपूर्ण संस्थानों के सहयोग से भारतीय भाषाओं के यूनिकोड संबंधित फ़ॉन्ट, ओपन टाइप फ़ॉन्ट एवं प्रकाशन कार्य के लिए प्रयुक्त होनेवाले फ़ॉन्ट को विकसित किये हैं। इसके अतिरिक्त इन महत्वपूर्ण संस्थानों ने भारतीय भाषाओं के लिए टू-टाइप फ़ॉन्ट, की-बोर्ड ड्राइवर, मल्टी फ़ॉन्ट की-बोर्ड इंजिन, यूनिकोड की-बोर्ड ड्राइवर, स्टोरेज कोड परिवर्तक, स्पेल चेकर, शब्दकोश (ऑनलाइन), डेकोरेटिव फ़ॉन्ट डिजाइनर उपकरण, डाटाबेस सर्टिंग उपकरण एवं विंडोज़ के लिए लिप्यंतरण टूल्स आदि तैयार किया है। यह सभी उपकरण विंडोज़ के सभी ऑपरेटिंग सिस्टम जैसे विंडोज़ 2000, एक्स्पी, विस्टा एवं विंडोज़ 2007, 2008 को सपोर्ट करते हैं। यूनिकोड का मतलब है सभी लिपि चिन्हों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक सक्षम और एक समान मानकीकृत कोड।

यूनिकोड : यूनिकोड दुनिया के अधिकांश लेखन प्रणालियों में व्यक्त पाठ के एनकोडिंग के लिए एक कम्प्यूटिंग मानक है। यूनिकोड दुनिया में प्रचलित सभी भाषाओं के प्रत्येक अक्षर के लिए चाहे कोई भी कंप्यूटर प्लैटफॉर्म हो, कोई भी प्रोग्राम हो एक विशेष नंबर प्रदान करता है। कंप्यूटर मूल रूप से इन नंबरों से संबंध रखते हैं। ये प्रत्येक अक्षर और वर्ण के लिए एक नंबर निर्धारित करके अक्षर और वर्ण संग्रह करते हैं। यूनिकोड स्टैन्डार्ड को एपल, एचपी, माईक्रोसॉफ्ट जैसे दिग्गज, सॉफ्टवेयर कंपनियों ने अपनाया है। यूनिकोड स्टैण्डार्ड की उत्पत्ति और उसके सहायक उपकरणों की उपलब्धता हाल ही के विश्वव्यापी संचार क्रांति का एक झलक है। यूनिकोड को ग्राहक सर्वर अथवा बहुआयामी उपकरणों और वेबसाइटों में शामिल करने से, परंपरागत उपकरणों के प्रयोग की अपेक्षा खर्च में अत्यधिक बचत होती है। यूनिकोड एक ऐसा अकेला सॉफ्टवेयर उत्पाद है जिसे री-डिजाइनिंग किए बिना विभिन्न फ्लैटफॉर्म, भाषाओं और देशों में उपयोग किया जा सकता है। यूनिकोड आविष्कार होने से पहले दुनिया के सभी भाषाओं को कवर करने के लिए अनेक संकेत लिपियों की आवश्यकता होती थी। अंग्रेजी जैसी आसान भाषा के लिए भी सभी अक्षरों, विरामचिन्हों और सामान्य प्रयोग के तकनीकी प्रतीकों हेतु एक ही संकेत लिपि पर्याप्त नहीं थी। ऐसे में किसी भी कंप्यूटर (विशेष रूप से सर्वर) को विभिन्न संकेत लिपि संभालनी पड़ती थी। फिर जब विभिन्न संकेत लिपियों के माध्यम से डेटा का संप्रेषण किया जाता है तो डेटा हमेशा खराब होने की आशंका बनी रहती थी। यूनिकोड जैसी वैज्ञानिक प्रणाली के आविष्कार से इन समस्याओं का समाधान हो गया है।

चिता और चिंता में फर्क सिर्फ इतना है कि चिता मुर्दों को जलाती है और चिंता जिंदों को।

यूनिकोड़ की विशेषताएँ

1) यह एक वैज्ञानिक एवं अति विकसित प्रणाली है, जो कंप्यूटर के हर ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए उपयोगी है।
2) यह विश्व के सभी लिपियों के सभी संकेतों के लिए एक अलग कोड बिन्दु प्रदान करता है।
3) यह भाषाओं का एकीकरण करने का प्रयत्न करता है।
4) इस वैज्ञानिक प्रणाली में बांएँ से दाएँ लिखी जाने वाली लिपियों के अतिरिक्त दाएँ से बांएँ लिखी जाने वाली लिपियों को भी शामिल किया गया है।

यूनिकोड के महत्व

1) एक ही दस्तावेज़ में अनेक भाषाओं के टेक्स्ट लिखे जा सकते हैं।
2) टेक्स्ट को कंप्यूटर के किसी भी ऑपरेटिंग सिस्टम में प्रयोग किया जा सकता है। इसमें डेटा खराब होने की संभावना नहीं रहती।
3) टेक्स्ट को केवल एक ही निश्चित तरीके से संकलित/संस्कारित करने की ज़रूरत पड़ती है।
4) किसी सॉफ्टवेयर उत्पाद का एक ही संस्करण पूरे विश्व में किसी भी कंप्यूटर प्रोग्रामर पर चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय भाषाओं के लिए अलग से संस्करण बनाने की जरूरत नहीं पड़ती।

देवनागरी यूनिकोड

1) देवनागरी यूनिकोड की परास (रेंज) 0900 से 097F तक हैं। (चार्ट में प्रदर्शित)
2) वर्ण, क्ष, त्र, ज्ञ, के लिए अलग से कोड नहीं है। इन्हें संयुक्त वर्ण मानकर अन्य संयुक्त वर्ण की भॉति इनका अलग से कोड़ नहीं दिया गया है।
3) नुक्ता वाले वर्णों के लिए भी यूनिकोड निर्धारित किया गया है, एवं नुक्ता के लिए भी अलग से एक यूनिकोड निर्धारित किया गया है।

अंत में

भारत में किसी भी भाषा का संप्रेषण केवल विद्वानों तक सीमित नहीं होता। भाषा पर समाज के सभी वर्ण का समान अधिकार होता है। भाषिक प्रचार का पहला तत्व है-भाषिक संप्रेषण। अतः भाषा प्रौद्योगिकी को अधिक सक्षम बनाने के लिए निरंतर शोध एवं अद्यतन की जरूरत है। आज सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति को यूनिकोड जैसे वैज्ञानिक एवं विकसित प्रणाली ने एक नया आयाम दिया है। यूनिकोड मानो विश्व की सारी भाषाओं को एक ही मानक एवं एक ही सूत्र में बांध रखा है। ❐❐

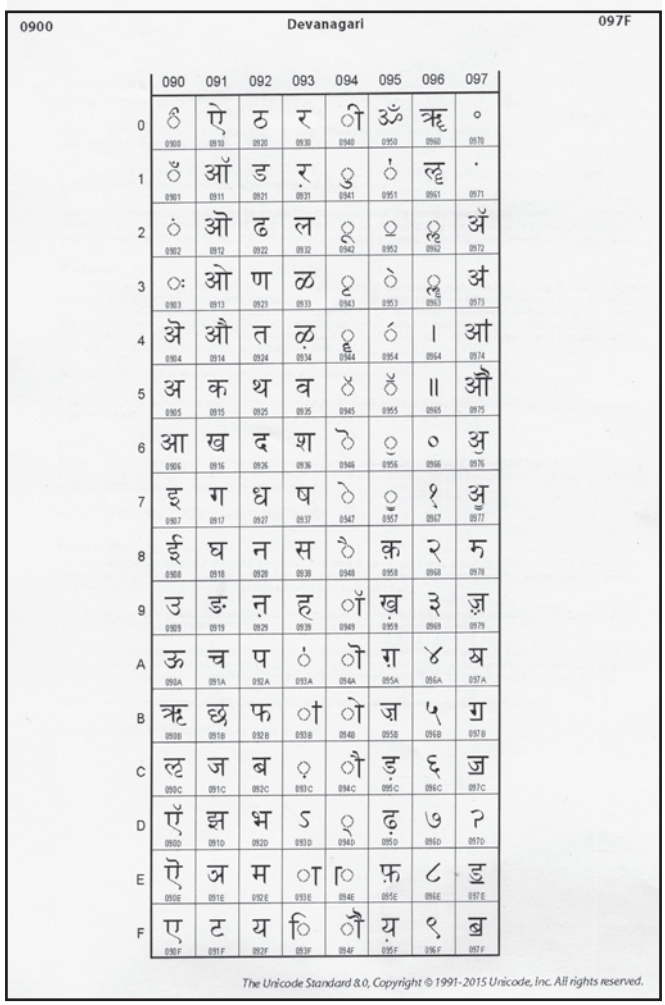

दया ही धर्म की जन्मभूमि है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2014 के पालन पर रिपोर्ट

उद्घाटन समारोह

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री कृष्णकुमार द्वारा पारम्परिक दीप प्रज्वलन के साथ 27.10.2014 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह उद्घाटन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

बैनरों एवं पोस्टरों का प्रदर्शन

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में 27.10.2014 से 01.11.2014 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2014 मनाया गया। पोर्ट के प्रमुख स्थानों में संदर्भित विषय को दर्शाने वाले पोस्टरों एवं बैनरों का प्रदर्शन किया गया।

सतर्कता शपथ

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष द्वारा प्रशासनिक कार्यालय में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को सतर्कता शपथ दिलाया गया। पोर्ट के सभी विभागों/प्रभागों में भी कर्माचारियों को शपथ दिलाया गया।

29.10.2014 को पुराने बोर्ड कक्ष में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट कर्मचारियों के लिये निबंध लेखन/भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। भाषण का शीर्षक था "सरकारी कार्यालय में पारदर्शिता में सुधार-सूचना का आधिकार की

भूमिका"। निबंध लेखन का शीर्षक था "सरकारी संगठनों में पारदर्शिता एवं दक्षता में सुधार-सीसीटीवी कैमरों की भूमिका"। इस संदर्भ में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट कर्मचारियों की प्रतिक्रिया अच्छी थी।

प्रतियोगिताएँ

कोचिन पोर्ट के केन्द्रीय विद्यालय एवं ब्रिस्टो स्कूल, विल्लिंगडन आइलन्ड में 28.10.2014 को विद्यालय के छात्रों के लिये "भष्टाचार का विरोध-प्रौद्योगिकी की भूमिका" शीर्षक पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उपर्युक्त विद्यालयों के छात्रों के लिये "भष्टाचार मुक्त भारत-आपका सपना" शीर्षक पर 29.10.2014 को पोस्टर डिजाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस संदर्भ में इन दो विद्यालयों के छात्रों और अध्यापकों की प्रतिक्रिया प्रोत्साहजनक था। उसी दिन, उप मुख्य सतर्कता अधिकारी ने केन्द्रीय भण्डारण निगम के कर्मचारियों को उनके कोचिन कार्यालय में सम्बोधित किया।

संगोष्ठी

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के प्रशासनिक भवन के सम्मेलन कक्ष में फर्टीलाइजेसर्स एण्ड केमिकल्स त्रावणकोर लिमिटेड, उद्योगमण्डल, कोचिन के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री जे.विनयन, आईआरटीएस द्वारा 30.10.2014 को "भष्टाचार का विरोध-सक्षम के रूप में प्रौद्योगिकी" संदर्भ पर एक संगोष्ठी का संचालन किया। कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष, मुख्य सतर्कता अधिकारी, विभागाध्यक्षों एवं वरिष्ठ अधिकारीगण इस संगोष्ठी में भाग लिया। यह सत्र सर्वाधिक संवादात्मक एवं उपयोगी था।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

दिनांक 31.10.2014 को प्रशासनिक भवन के सम्मेलन कक्ष में एक अंतर विभागीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का संचालन किया गया था। वाद-विवाद का शीर्षक था "सक्षम प्रौद्योगिकी द्वारा सरकारी कार्यालयों में व्यापक रूप से पारदर्शिता में सुधार"। इस प्रतियोगिता में पांच विभागों ने भाग लिया एवं यातायात, वित्त एवं सामान्य प्रसासन विभाग ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

मौन और आत्म नियंत्रण ही अहिंसा है।

समापन समारोह

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के प्रशासनिक भवन के सम्मेलन कक्ष में 1 नवम्बर, 2014 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2014 का समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के विभागाध्यक्ष, कर्मचारी एवं विल्लिंगडन आइलन्ड के ब्रिस्टो स्कूल एवं केन्द्रीय विद्यालय, पोर्ट ट्रस्ट के छात्र एवं अध्यापकों ने भाग लिया। कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री आर. रामकृष्णन, आईएएस, ने स्वागत भाषण प्रदान किया एवं कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री पोल आन्टणी, आईएएस, ने समारोह को सम्बोधित किया। अध्यक्ष महोदय ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किया।

सतर्कता अनुभाग ❐❐

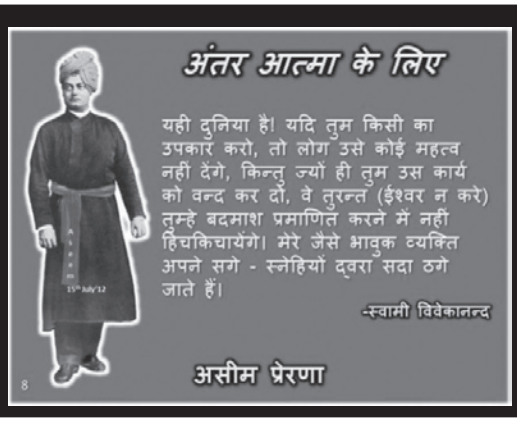

नम्रता सद्‌गुणों की आधारशिला है।

लड़कियों के लिये सुरक्षा

भारतीय महिलायें बड़े और छोटे शहरों में छेड़खानी, हमले, और बलात्कार के भय से जीते हैं। उनके लिये, जिनको इस विषय को मजाक में लेने या इस प्रकार की संभावनाओं को सहन करने का कोई इरादा नहीं है, उनके लिये आत्म-रक्षा पर यहाँ कुछ विशेष सुत्र हैं।

सी.के. शिवरामन
उप सामग्री प्रबन्धक

कमजोरियों को पहचानें

1. बालः जोर से खींचे। पकड़े एवं सिर तोड़ने के लिए सतह में उपलब्ध कोई भी वस्तु का उपयोग करें।
2. कानः अपने हाथों से मजबूती से सिर के दोनों ओर के कान को पकड़ें एवं जोरदार तमाचा लगा दें।
3. चेहराः अपने नाखूनों से चेहरे को नोचें।
4. आंखेंः जहाँ तक संभव अपनी तर्जनी एवं मध्यम उंगली से एवं अपने जेब में यदी कोई नुकीली वस्तु है तो उससे तेजी से एवं कठोरता से प्रहार करें।
5. नाकः नीचे से ऊपर की तरफ नष्ट करने के लिए अपने हाथ की एड़ी का प्रयोग करें। अपने सिर के साथ उसके नाक को तीव्र प्रहार करें।
6. ठोड़ीः नीचे से ऊपर की तरफ नष्ट करने के लिए अपने हाथ की एड़ी का प्रयोग करें।
7. गलाः मजबूत उँगलियों, मुट्ठी या कोहनी के साथ कठोरता से प्रहार करें। कंठ अथवा इसके ठीक नीचे को अपना निशाना बनायें।
8. उंगलियोंः छोटी उंगलियों को पीछे की तरफ़ घूमाएं और अपने हमलावर पर प्रहार करने के लिये तैयार रहें।
9. हाथः जहाँ तक संभव कठोरता से कांट लें। अपने नाखूनों अथवा पेंसिल या पेन जैसे कोई तेज वस्तु से स्क्रैच करें।
10. जांघः घुटने के साथ ऊपर की ओर प्रहार करें। पूरी ताकत के साथ लात मारे। अपने हाथों से सीधा घूंसा मारें एवं पीछे की ओर पूरी ताकत से प्रहार करें।
11. घुटनेंः जोर से लात मारें।
12. शिन्सः जोर से लात मारें। अपने जूते की नुकीले धार से अथवा अपने एड़ियों से प्रहार करें।
13. पांवः अगर पीछे से हमला हो तो अपनी एड़ी के साथ उस पर जोर से प्रहार करें।

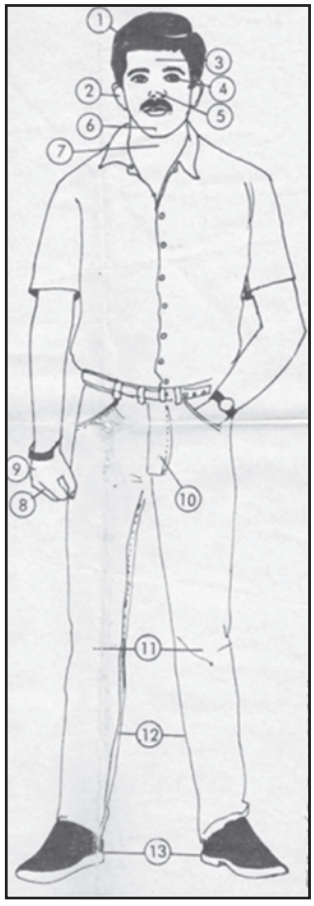

एक छोटी या बड़ी हमले से निपटने के लिए यहां कुछ सूत्र बताये गये हैं, ताकि आप पीड़ित नहीं अपितु एक विजेता के रूप में उभर सकें।

नम्रता की उंचाई का कोई नाप नहीं होगा।

स्ट्रे शॉट्स, दिलेरी का चित्र

चित्र 1: आपत्तिजनक नज़दीकी को कैसे रोकें (बसों और ट्रेनों में) उसकी ठोड़ी के नीचे पर जोरदार प्रहार करने हेतु अपनी कोहनी उठायें।

चित्र 2: अगर आप खतरे को आगे बढ़ते हुए देखते हैं तो उसके दोनों कानों पर जोरदार थप्पड़ जड़ें। उसकी खोपड़ी के अंदर सृजित खालीपन उसे क्षण भर के लिये निष्क्रिय बना देगा।

चित्रि 3: यदि कोई मनचला पीछे से आपको पकड़ लेता है अपनी एड़ी के जूते से उसके पैरों को कूचलें।

चित्र 4: आनेवाले भय को भयभीत करें। उसके बालों को जोर से खींचे, तब तक खींचे जब तक उससे कुछ बाहर न आ जाएँ

चेन छीनना

चित्र 1

चित्र 2

चित्र 3

सुंदर गहने के बारे में घिनौनी सच्चाई यह है कि वह वे छोटे-मोटे चोरों की आँखों को आकर्षित करते हैं। आप किसी सोच में खो चल रहे हैं और एक बदमाश आपके चेन को छीनने के लिये आ जाता है। फ़ौरन कार्रवाई करें। अपनी मुट्ठी में उसके फैलाये हुए हाथ को पकड़ लें एवं जैसे ही वह झूके उसके चेहरे को लात मारें। अगर आप छोटे हैं तो उसके जांघ को लात मारें। चित्र कार्रवाई श्रृंखला को दर्शाता है।

पुलीस की टिप्पणी: ध्यान रखें। आप चोर पर हमला करने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि वह अकेला है। आमतौर पर इन चेन छीनने वाले चोर एक गिरोह में काम करते हैं, अतः ऐसी स्थिति में अपने आप को जोखिम में डालने से बेहतर यही होगा कि उसे चेन के साथ जाने दें।

गरीब वह नहीं जिसके पास कम है, बल्कि वह है जो अधिक चाहता है।

शारीरिक हमला

चित्र 1

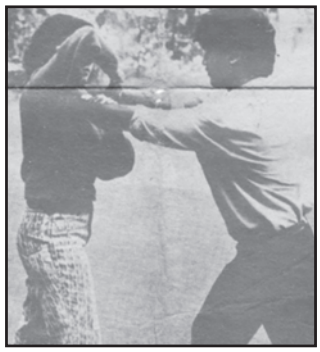
चित्र 2

चित्र 3

चित्र 4

आपका गला घोंटा जा रहा है। अपनी दोनों मुट्ठी के साथ उसके हाथों को रोक लें; उसे दर्द से छुकने के लिये उसके एक हाथ को मरोड़ दें। उसके पीठ पर जोर से प्रहार करें। उपर्युक्त दृश्य इस कार्रवाई की श्रृंखला को दर्शाता है।

कानूनी समाधानः यदि आपके पास गवाह हैं, तो आप उसे दोषी ठहरा सकते हैं।

बैग झपट लेना

चित्र 1

चित्र 2

चित्र 3

चित्र 4

आपका पैसा या आपका जीवन? नहीं! जल्दी से पलटे। उसके दंभी चेहरे पर एक अप्रत्याशित तमाचा जड़ दें। जब तक वह संभले तब एक हाथ से उसके बालों को अपनी मुट्ठी में भर लें और अपने पैरों से उस पर हमला करें। ऐसे करने पर पीड़ित उस पर हावी हो जाता है और उसका बैग उसका हथीयार बन जाता है। उपर्युक्त दृश्य इस कार्रवाई की श्रृंखला को दर्शाता है।

कानूनी समाधानः अगर यह कार्य आपके आत्मसम्मान को अपमानित कर रहा है, आप उसे अदालत में खींच सकते हैं। आपको इस घटना के लिये एक गवाह की जरूरत है।

पुलिस की टिप्पणीः हमलावर को पुलिस स्टेशन तक ले जाने का प्रयास करें एवं एक एफ.आई.आर. दर्ज करें। अगर वह भाग जाता है, उसके चेहरे की विशेषताओं को याद रखें, उसकी लम्बाई, एवं उसका वर्ण ताकि बाद में उसकी पहचान हो सके।

निर्धनता आलस्य का पुरस्कार है।

चाकू दिखाना

चित्र 1

चित्र 2

चित्र 3

चाकू की नोंक पर आपसे छेड़छाड़-चोरी करने का प्रयास। न घबराएं। तुरंत चौकने हो जाएं एवं अपने दिमाग को जागृत कर लें, उसके हाथों के चाकू को रोक लें, उसके हाथों को मरोड़ दें, जैसे ही दर्द से चिल्लाने लगे अपनी कोहनी से उसकी ठोड़ी पर प्रहार करें। फिर से लड़ाई न करें (यह याद रखें कि वह हथियार से लैस है) जितनी जल्द संभव उस स्थान से चले जाएं। उपर्युक्त दृश्य इस कार्रवाई की श्रृंखला को दर्शाता है।

कानूनी समाधानः यदि कोई चाकू मारने या हत्या करने का प्रयास करता है। तो आपको अपनी रक्षा करने का पूर्ण अधिकार है। ध्यान रखें कि कानून आपको इस हमले को रोकने के लिए और इससे स्वयं को बचाने के लिए आवश्यक पड़ने पर पूरी तरह प्रयास करने की अनुमति देती है।

पुलिस की टिप्पणीः जब ऐसी स्थिति में फंस जाएं, तो शोर न मचाएं। एक चाकू दिखाने वाला बदमाश आप को घायल करने में संकोच नहीं करेगा। इससे बचने के बाद एफ.आई.आर.दर्ज करें। ❐❐

कोचिन पोर्ट की कहानी

कोचिन सागा कोचिन बंदरगाह के निर्माण से जुड़ी चुनौतियों, प्रकृति लोग एवं शक्ति केंद्र से संबंधित सूत्रधर की गाथा है। सन् 1959 में पहली बार प्रकाशित यह एक परियोजना के उद्भव और विकास की कहानी है, जो सर रॉबर्ट ब्रिस्टो की शक्ति, विश्वास और ढृढ़ता एवं महत्वपूर्ण अभियांत्रिकी चुनौतियों का द्योतक है। चार भागों में विभाजित इस गाथा का पहला भाग अंतर्देशीय बंदरगाहों के इतिहास एवं प्रचालनों से संबंधित है। दूसरा भाग एक व्यक्तिगत कथा है जिसमें 21 वर्षों के कार्यों के उद्देश्यों के इतिहास के बीच स्थित अंतर और एक ऐसे व्यक्ति जो इसके साथ गहराई से जुड़ा है, के अनुभव को उजागर किया गया है। तीसरा भाग लेखक और चार सरकार एवं व्यापारिक प्रतिनिधियों के बीच की कठिनाइयाँ जिसे प्रस्ताव से पहले हल किया जा सकता था एवं डिजाइन शुरू किया जा सकता था, को बयाँ करता है। यह भी ब्रिस्टो के घरेलु जीवन, सामाजिक कर्तव्यों, आहार, घरेलु खर्च संबंधी विवरण होता है। चौथा भाग, के उपसंहार में, संग्रम शुरू होने के पश्चात जल्द शुरू हुए एवं सन् 1941 के बाद से कोचिन में घटित घटनाओं का संक्षिप्त विवरण एवं भारत में तत्कालीन राजनीतिक और आर्थिक स्थिति का पता चलता है। इस पुस्तक को अच्छी तरह से प्राप्त किया गया था और इसका दूसरा संस्करण सन् 1967 में प्रकाशित हुआ था। अब लगभग पांच दशकों के बाद इस पुस्तक की मांग कम नहीं हुआ है। इसका तीसरा संस्करण ब्रिस्टों मेमोरियल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित किया गया है और इसकी बिक्री से लब्ध आय कोचिन पोर्ट विरासत संग्रहालय के विकास के लिए खर्च किया जाएगा।

डॉ.सी. उण्णिकृष्णन नायर
यातयात प्रबंधक ❐❐

निराशा संभव को असंभव बना देती है।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्ट - 2015

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक हर तिमाही में नियमित रूप से आयोजित की जाती है।
- राजभाषा अधिनियम1963 की धारा 3(3) का अनुपालन किया जाता है।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण

➢ केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों/सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/संस्थानों आदि में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित संसदीय राजभाषा समिति ने 1 नवंबर 2012 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट का राजभाषायी निरीक्षण किया और कोचिन पोर्ट में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यों की सराहना की।

➢ दिनांक 7-5-2015 को श्रीमती विनीत कुलश्रेष्ठ, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) एवं श्री. कमल स्वरूप, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, पोत परिवहन मंत्रालय, नई दिल्ली ने कोचिन पोर्ट ट्रस्ट का राजभाषायी निरीक्षण किया।

हिन्दी प्रशिक्षण

हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण के लिए नामित किया जाता है। सर्वाधिक अंकों के साथ प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण होने वाले कर्मचारियों को राजभाषा विभाग द्वारा यथा निर्धारित नकद पुरस्कार, 12 महीने के

लिये एक वेतन वृद्धि एकमुश्त प्रदान की जाती है। तकनीकी कर्मचारियों को भी हिन्दी में प्रशिक्षण दी जाती है। पिछले वर्ष कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण उप संस्थान के अंतर्गत पूर्णकालिक गहन हिन्दी प्राज्ञ प्रशिक्षण का आयोजन किया गया और इसकी परीक्षा सी.पी.टी. में आयोजित की गई। हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में आयोजित हिन्दी प्राज्ञ पाठ्यक्रम के लिए कर्मचारियों को नामित किया गया। इसकी परीक्षा भारत सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत काक्कनाड में चलाई गई।

10 दिसंबर, 2014 को बी.पी.सी.एल-के.आर, नगर कार्यालय, मरडू में कोच्ची टोलिक द्वारा आयोजित राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम में श्रीमती. सूसन वर्गीस, सहायक सचिव ग्रेड-1 (रा.भा) और श्रीमती. एस.राजलक्ष्मी, अवर श्रेणी लिपिक ने भाग लिया।

ओरियंटल इंश्योरेंस कंपनी लि. के क्षेत्रीय कार्यालय, एरणाकुलम में 10-1-2015 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में श्री. मानस रंजन त्रिपाठी, हिन्दी अनुवादक तथा हिन्दी अनुभाग में तैनात अवर श्रेणी लिपिक, श्रीमती. एस. राजलक्ष्मी ने भाग लिया।

श्रीमती. सूसन वर्गीस, सहायक सचिव ग्रेड-1 (रा.भा) ने बी.एस.एन.एल. भवन में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नरकास) कोचिन (उपक्रम) की 14वीं बैठक में भाग लिया।

हिन्दी प्रशिक्षण और कार्यशाला के प्रतिभागियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी पिकनिक का आयोजन किया जाता है।

संयुक्त हिन्दी पखवाडा-कोच्ची टोलिक (उपक्रम)

परोपकार का प्रत्येक कार्य स्वर्ग की ओर एक कदम है।

कोच्ची टोलिक (उपक्रम) द्वारा आयोजित संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा-2014 के क्रम में दिनांक 12-09-2015 को बी.एस.एन.एल., एर्णाकुलम में आयोजित संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह में हमारे कार्यालय को प्राप्त पुरस्कार निम्नवत हैः

1. संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिन्दी फिल्म गीत (पुरुष वर्ग) प्रतियोगिता में श्री. बलराम, सचिव के वैयक्तिक सहायक को प्रथम पुरस्कार।
2. संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित डमशेराड्स प्रतियोगिता में श्रीमती. एम.जी. बिन्दु, नर्सिंग सुसिटर और श्रीमती. एस. राजलक्ष्मी, अवर श्रेणी लिपिक को प्रथम पुरस्कार।
3. राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार।

हिन्दी पखवाड़ा - 2014

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में 16 से 30 सितंबर 2014 को हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस क्रम में अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिन्दी गीत, अंताक्षरी, कवितापाठ, हिन्दी में प्रशासनिक शब्दावली एवं टिप्पण व प्रारूपण, भाषण, वाचन प्रतियोगिता, पैराग्राफ-श्रृत लेखन आदि प्रतियोगिताएं चलाई गई। कर्मचारियों के बच्चों के लिए भी हिन्दी गीत, भाषण आदि प्रतियोगिताएं चलाई गई।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किए गए। एसएसएलसी/सीबीएसई(10वीं) कक्षा एवं 12वीं कक्षा के हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले पोर्ट कर्मचारियों के बच्चों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिए गए। हिन्दी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार दिए गए। हिन्दी पखवाड़ा के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक पोयंट प्राप्त करनेवाले सचिव के कार्यालय को "चल वैजयंती पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

18-10-2014 को हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया। श्री. पोल आन्टणी, आईएएस, अध्यक्ष, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट इस समारोह के अतिथि रहे। डॉ. सी. उण्णिकृष्णन नायर, सचिव, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट ने इस समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती. सूसन वर्गीस, सहायक सचिव ग्रेड-1 (राजभाषा) ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. सी. उण्णिकृष्णन नायर, सचिव ने अध्यक्षीय भाषण तथा श्री. वीपिन आर. मेनोत्त, वरिष्ठ उप यातायात प्रबन्धक, कोचिन पोर्ट ट्रस्ट ने बधाई भाषण दिया। संस्कृतिक कार्यक्रम के बाद श्रीमती. एस. राजलक्ष्मी, अवर श्रेणी लिपिक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

हिन्दी वेब साइट

- हिन्दी वेब साइट का कार्य प्रगति पर है।
- विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारियों के कंप्यूटरों में यूनिकोड इंस्टाल कर दिया गया है।

पुस्तक पास में हो तो मित्रों की कमी नहीं खलती है।

"कोचिन लहर"- हिन्दी गृह पत्रिका

हर साल हिन्दी गृह पत्रिका "कोचिन लहर" का विमोचन किया जाता है। अधिकारी/कर्मचारी/उनके बच्चे एवं परिवार सदस्यों से प्राप्त लेखन सामग्री/कार्टून्स/तस्वीर/यात्रा विवरण/ कविता आदि का प्रकाशन किया जाता है। कोचिन लहर में प्रकाशित सभी लेखों के लेखकों को सम्मानित किया जाता है।

हिन्दी कार्यशाला

- कर्मचारियों को कार्यालयीन गतिविधियों में हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कराने हेतु नियमित रूप से हिन्दी कार्यशालाओं आयोजन किया जाता हैं।

- राजभाषा नियम, विनियम, फाइल एवं रजिस्टरों में टिप्पण एवं आलेखन तथा सेवा पंजियों में प्रविष्टियाँ संबंधी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।
- बोलचाल के हिन्दी संबंधी कार्यशालाएं।
- कंप्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग संबंधी कार्यशाला।

- हिन्दी कार्यशाला के समापन दिवस में कर्मचारियों की दक्षता को प्रोत्साहित करने के लिए विविध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाता है।

पुस्तकालय

- हमारे कार्यालय में 2 हिन्दी पुस्तकालय प्रवृत्त है।
- एक हिन्दी अनुभाग में- "पोर्ट ज्योति"
- दूसरा पी एवं आर प्रभाग में है।
- अधिकारी/कर्मचारियों के बीच में वनिता, सरिता, सरस सलिल, गृह शोभा, मेरी सहेली आदि हिन्दी मासिकाओं तथा हिन्दी अखबार "नव भारत टाइम्स" का संचारित किया जाता है।
- हिन्दी पुस्तकों की खरीदी के लिए 50% बजट का उपयोग किया जाता है।
- हिन्दी विज्ञापनों के लिए समूचित खर्च किए जाते हैं।

नकद पुरस्कार

- सीबीएसई/एसएसएलसी/12वीं कक्षा स्तर तक हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाले कर्मचारियों के बच्चों के लिए नकद पुरस्कार योजना।
- अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण और आलेखन के लिए नकद पुरस्कार।
- कार्यालय में राजभाषा के श्रेष्ठतम निष्पादन की दिशा में सुझाव आमंत्रण योजना शुरू की गई। इसके अंतर्गत श्रेष्ठ सुझाव प्रदान करनेवाले अधिकारी/कर्मचारियों को हर सुझाव के लिए 500/- रुपये नकद पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

पुस्तकों से विहीन घर खिड़कियों से विहीन भवन के समान है।

हार्दिक बधाइयाँ

श्री. जी. कृष्णकुमार

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष श्री. जी. कृष्णकुमार ने 10.3.2015 को कोलकोता पोर्ट ट्रस्ट के उपाध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्री. गुरुप्रसाद रॉय.एम

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के मुख्य अभियंता श्री. गुरुप्रसाद रॉय.एम. ने 11.3.2015 को मुंबई पोर्ट ट्रस्ट में मुख्य अभियंता के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्री. कप्तान.गौरी प्रसाद बिस्वाल

पारदीप पोर्ट ट्रस्ट के उप संरक्षक कप्तान, गौरी प्रसाद बिस्वाल ने 08.06.2015 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में उप संरक्षक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्री. डॉ. प्रहल्लाद पंडा

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रहल्लाद पंडा ने 24.4.2015 को पारदीप पोर्ट ट्रस्ट में मुख्य चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्री. सरोजकुमार दास

कांडला पोर्ट ट्रस्ट के उप मुख्य यांत्रिक अभियंता, श्री. सरोज कुमार दास ने 09.01.2015 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में मुख्य यांत्रिक अभियंता के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्री. के.जी.नाथ

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी श्री.के.जी. नाथ ने 08.06.2015 को मुंबई पोर्ट ट्रस्ट में वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

बुरी पुस्तकों का पढ़ना जहर पीने के समान है।

श्री. कप्तान.पोल.एन.जोसफ

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उप संरक्षक कप्तान, पोल.एन. जोसफ ने 01.06.2015 को पाराद्वीप पोर्ट ट्रस्ट में उप संरक्षक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्रीमती. गौरी.एस.नायर

पोत परिवहन मंत्रालय के अवर सचिव श्रीमती. गौरी.एस.नायर ने 20.05.2015 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में सचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्री. विपिन आर. मेनोत्त

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के उप यातायात प्रबंधक श्री. विपिन आर. मेनोत्त ने 18.12.2014 को मुरगांव पत्तन न्यास में यातायात प्रबंधक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

श्री. आर.रामकृष्णन

श्री. आर. रामकृष्णन, आई.ए.एस ने तुत्तुकूडी पत्तन न्यास के अतिरिक्त कार्यभार के साथ 30.10.2014 को कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

अभिनंदन

मरिया मेरीन आंटणी

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के मुख्य अभियंता कार्यालय के सिविल अभियंत्रण विभाग में कार्यरत कार्यपालक अभियंता (पीडी), श्रीमती. सी.ए.फिलो की सुपुत्री मरिया मेरीन आंटनी ने कुसाट विश्वविद्यालय (मोडल इंजीनियरिंग कालेज, त्रिक्काक्करा, कोचिन) से वर्ष 2015 को बी.टेक (इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रोनिक्स) में प्रथम रैंक प्राप्त किया है।

जेसिन जेइम्स

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट, सामान्य प्रशासन विभाग के हिन्दी अनुभाग में कार्यरत सहायक सचिव ग्रेड-I (रा.भा), श्रीमती सूसन वर्गीस की सुपुत्री जेसिन जेइम्स ने केरल विश्वविद्यालय (कालेज ऑफ इंजीनियरिंग, तिरुवनन्तपुरम) से एम.टेक (सिगनल प्रोससिंग) में तृतीय रैंक प्राप्त किया।

लक्ष्मी मोहन

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट, के समुद्री विभाग में लेखाकर के रूप में कार्यरत श्री टी.वी. मोहनकुमार की सुपुत्री तथा सेंट पाट्रिक्स अकादमी, मन्जप्रा, अंकमाली विद्यालय के छात्री कुमारी लक्ष्मी मोहन को आईएससी 12वीं कक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर 99.5% अंकों के साथ दूसरे रैंक प्राप्त हुआ है।

प्रार्थना करने वाले हाथ से कर्म का हाथ श्रेष्ठ है।

वर्ष 2014-15 के दौरान क्रीड़ा क्षेत्र में उपलब्धियां

16 से 18 दिसंबर, 2014 तक विशाखपट्टनम पोर्ट ट्रस्ट में हुई अखिल भारतीय मेजर पोर्टस् अथलेटिक मीट में पुरुषों की श्रेणी में श्री. के.जे. जोयसन ने 800 मी दौड़ में कांस्य पदक और 1500 मी, 5000 मी तथा 10000 मी में रजत पदक जीत लिया।

8 से 11 जनवरी, 2015 तक वी ओ सी पोर्ट ट्रस्ट, तुत्तूक्कुडी में आयोजित अखिल भारतीय मेजर पोर्टस् सांस्कृतिक सम्मेलन में हमारी टीम ने प्ले लेट में द्वितीय स्थान तथा समूह गान प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अखिल भारतीय मेजर पोर्टस् सांस्कृतिक सम्मेलन में हमारी टीम

11 से 13 मार्च, 2015 तक कामराज पोर्ट ट्रस्ट, चेन्नै में आयोजित अखिल भारतीय मेजर पोर्टस् शटल बैडमिंटन में हमारे टीम ने फ़ाइनल में विशाखपट्टनम पोर्ट ट्रस्ट को पराजित कर चैंपियनशिप जीत लिया।

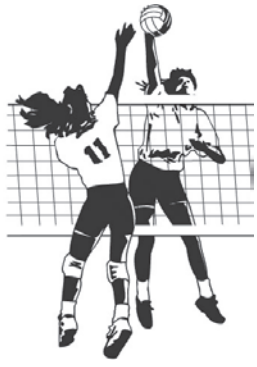

श्री. जॉय.टी.आंटणी, वरिष्ठ लेखाकार, सामान्य प्रशासन विभाग ने पुरुष एकल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक और उन्होंने श्री. प्रणव एस, खेल-कूद प्रशिक्षक को पार्टनर करके ओपन युगल प्रतियोगिता भी जीत लिया। श्री. प्रणव एस, खेल-कूद प्रशिक्षक ने ओपन पुरुष एकल प्रतियोगिता जीत लिया और श्री. अश्विन पोल, खेल-कूद प्रशिक्षक ने ओपन पुरुष एकल प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीत लिया है।

23 से 27 मार्च, 2015 तक कोलकोता पोर्ट ट्रस्ट द्वारा आतिथेय अखिल भारतीय मेजर पोर्ट्स फुटबॉल प्रतियोगिता में हमारे टीम ने फाइनल में मेज़बान कोलकाता को 2-1 से हराकर चैंपियनशिप जीत लिए।

इस वर्ष मई में अखिल मेजर पोर्ट्स वोलीबाल और बीच वोलिबोल आयोजित नहीं किया गया। 10 से 15 मार्च 2015 तक मानंतवाडी वयनाड में आयोजित अखिल भारतीय वोलीबॉल प्रतियोगिता में हमारी टीम ने जीत दर्ज किया और 16 से 17 नवंबर 2014 तक मन्नारकाड, पालक्काड तथा 19 से 23 नवंबर तक कालडी, तिरुवनन्तपुरम में आयोजित अखिल केरल वोलीबॉल प्रतियोगिता में हमारी टीम रनर्स ऑप रहा।

31 जनवरी, 2015 से 14 फरवरी 2015 तक केरल में आयोजित राष्ट्रीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में श्री. के. अब्दुल नाजर, वरिष्ठ लेखाकार केरल राज्य के बीच वोलीबॉल पुरुष टीम के शिक्षक थे जबकि श्री. पोल जोसफ, खेल-कूद निरीक्षक, खिलाड़ी के रूप में राज्य को प्रतिनिधित्व किया।

क्रीड़ा निरीक्षक

प्रतिभा एक प्रतिशत प्रेरणा और निन्यानवे प्रतिशत श्रम है।

हंसगुल्ले

1. पुलिस स्टेशन में लापता पति की रिपोर्ट दर्ज करवाने आयी महिला
   महिला : सर, मेरे पति पिछले एक हफ्ते से लापता हैं।
   पुलिस : उनकी कोई निशानी?
   महिला : ये सोनू 6 साल का और ये मोनू 4 साल का। (अपने दो बच्चों को दिखाते हुए)
2. ग्राहक इस कपड़े पर लिखा है कि : 70 प्रतिशत कॉटन, और 35 प्रतिशत टेरेलिन। तो यह तो 105 प्रतिशत हुआ।
   दुकानदार पांच प्रतिशत कपड़ा सिकुड़ेगा भी तो। :
3. लड़की मुझपे बहुत लड़के मरते हैं। :
   लड़का क्यों तेरा नाम व्यापमं है क्या ?
4. (एक होटल में)
   वेटर : कभी नाक, कभी हाथ, कभी पैर खुजला रहा था।
   ग्राहक : यह देख ग्राहक चिढ़ कर बोला खुजली है क्या?
   वेटर : सर जो भी है मैन्यू में लिखा है।
5. सोनू : मुझे शादी में BMW मिला है।
   मोनू : पर तेरे पास तो कोई गाड़ी नहीं है।
   सोनू : अरे गधे BMW का मतलब बहुत मोटी वाईफ़
6. प्रेमिका (प्रेमी से) : जानू हम कहां जा रहे हैं?
   प्रेमी : बेबी लंग ड्राइव पर।
   प्रेमिका : तो तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?
   प्रेमी : डार्लिंग, मुझे भी अभी-अभी पता चला, जब ब्रेक नहीं लगा।
7. एक लड़के ने एक लड़की को प्रपोज किया और कहा - 'आई लव यू'।
   लड़की ने लड़के को एक जोरदार थप्पड मारा ओर बोली- क्या बोला रे तू?
   रोते हुए लड़का बोला- जब सुना ही नहीं था, तो थप्पड क्यों मारा...।
8. प्रेमिका ने प्रेमी से पूछा-जानू, स्वर्ग में शादियां नहीं होती क्या?
   प्रेमी में हंसकर कहा-, वहां भी शादियां होने लगे तो स्वर्ग, नरक नहीं बन जाएगा।
9. गर्लफ्रेंड-बयफ्रेंड से देखो उस खिड़की पर तोता और मैना कितने प्यार से बैठे हैं, रोज साथ-साथ बैठते हैं, और एक हम हैं कि हमेशा लड़ते ही रहते हैं।
   बॉयफ्रेंड- हां, पर तुमने एक चीज ध्यान नहीं दिया। यहां बैठने वाले जोड़े में से तोता तो हर रोज वही होता है, पर मैना हमेशा नई होती है।
10. रामू : क्या बात है यार आज कल तेरी बीबी पूरा चुप रहती है।
    शामू : क्योंकि मैंने उसे बोला, डार्लिंग जब तुम चूप रहती हो, तो करीना कपुर लगती हो।
11. पहला दोस्त यार : ज़िन्दगी में शादी, बहुत जरुरी है
    दूसरा दोस्त क्यों : ?
    पहला दोस्त क्योंकिः ज़िन्दगी में खुशियाँ ही सब कुछ नहीं होती... गम भी बहुत जरूरी है।
12. पंडित : तेरा नाम छोटू है?
    छोटू : जी।
    पंडित : तेरा एक लड़का और लड़की है?
    छोटू : जी।
    पंडित : तूने आज ही 10 किलो गेहूं और 5 किलो चावल खरीदे हैं?
    छोटू : पंडितजी, आप तो अंतर्यामी हैं।
    पंडित : अबे गधे! अगली बार जन्मपत्री लाना, राशनकार्ड नहीं।
13. एक बार बस के कंडक्टर ने एक बच्चे से पूछा तुम हर रोज दरवाजे - के पास ही खड़े रहते हो तुम्हारा बाप चौकीदार है क्या?
    बच्चा बहुत ही शरारती था।
    वो बोला - तुम हमेशा मुझसे पैसे मांगते रहते हो, तुम्हारा बाप भिखारी है क्या?
14. पिता - बेटे से : ये शराब, सिगरेट और लड़कियां सब तुम्हारी जान के दुश्मन हैं।
    बेटा : पिताजी, जो अपने दुश्मनों से घबरा कर भाग जाए, वह मर्द नहीं होता। ❐❐

ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है।

मास्टर. सरुण पी.एस.
श्रीमती. सिनी पी.ए.,
संपदा अनुभाग का सुपुत्र

मास्टर. अभिनव सी.बी.
श्री. बैजु सी.पी.,
यातायात विभाग का सुपुत्र

मास्टर. डेरिक रोबी
श्री. रोबी अगस्टिन,
वरिष्ठ लेखाकार,
वित्त विभाग का सुपुत्र

कुमारी. क्रिस रोबी
श्री. रोबी अगस्टिन,
वरिष्ठ लेखाकार,
वित्त विभाग की सुपुत्री

उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक तुम्हें लक्ष्य की प्राप्ति न हो।

पोर्ट दिन समारोह

हिन्दी अनुभाग के कार्यालयीन गतिविधियों में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के लिये पोर्ट दिन समारोह के अवसर पर श्री.मानस रंजन त्रिपाठी, हिन्दी अनुवादक, अध्यक्ष महोदय से पुरस्कार स्वीकार करते हुए।

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट में स्वतंत्रता दिवस समारोह

कोचिन पोर्ट ट्रस्ट के अग्निशमन विभाग द्वारा प्रदर्शित अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षणाभ्यास।